Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 4-5

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

27 जमादी अव्वल 4 जमादी सानी 1441 हिजरी कमरी 23-30 सुलह 1398 हिजरी शमसी 23-30 जनवरी 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

अनिवार्य है कि इन्सान अपनी आस्थायों, कर्मों में नज़र करे। क्योंकि ख़ुदा तआला की आदत है कि सुधार माध्यम की शैली में होता है। वह कोई ना कोई ऐसा कारण पैदा कर देता है कि जो सुधार का कारण हो जाता है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

यह सच्ची बात है कि जो आदमी कर्मों से काम नहीं लेता वह दुआ नहीं करता बल्कि ख़ुदा तआला की आज़माईश करता है। इस लिए दुआ करने से पहले अपनी समस्त ताक़तों को ख़र्च करना ज़रूरी है और यही अर्थ इस दुआ के हैं। पहले अनिवार्य है कि इन्सान अपनी आस्थायों, कर्मों में नज़र करे। क्योंकि ख़ुदा तआला की आदत है कि सुधार माध्यम की शैली में होता है। वह कोई ना कोई ऐसा कारण पैदा कर देता है कि जो सुधार का कारण हो जाता है। वे लोग इस स्थान पर ज़रा विशेष विचार करें जो कहते हैं कि जब दुआ हुई तो माध्यम की क्या ज़रूरत है। वे नादान सोचें कि दुआ अपने आप में एक छुपा हुआ माध्यम है जो दूसरे माध्यमों को पैदा कर देता है और اِيَّاكَ نَعۡبُدُ کا تقدم اِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ पर जो दुआ का कलिमा है इस बात की विशेष व्याख्या कर रहा है। अत: अल्लाह तआला की आदत हम इसी तरह देख रहे हैं कि वह माध्यम पैदा कर देता है। देखो प्यास के बुझाने के लिए पानी और भूख मिटाने के लिए खाना उपलब्ध करता है मगर माध्यमों के द्वारा। अत: यह माध्यमों का सिलसिला इसी तरह चलता है और माध्यम ज़रूर होता है। क्योंकि ख़ुदा तआला के ये दो नाम ही हैं। जैसा कि मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब ने ज़िक्र किया था कि كَانَ اللّٰهُ عَزِيۡزًا حَكِيۡمًا (अन्निसा :159) अज़ीज़ तो यह है कि हर एक काम कर देना और हकीम यह कि हर एक काम किसी हिक्मत से अवसर और स्थान के उचित और यथा योग्य कर देना। देखो पेड़ पौधों , पत्थरों मैं भिन्न भिन्न प्रकार के गुण रखे हैं। तरबदही को देखो कि वह एक दो तौला तक दस्त ले आती है , ऐसा ही सक़मोनया। अल्लाह तआला इस बात पर क़ादिर है कि यूंही दस्त आ जाए या प्यास पानी के बिना बुझ जाए मगर चूँकि क़ुदरत चमत्कारों का इल्म कराना भी ज़रूरी था। क्योंकि जिस क़दर परिचय और क़ुदरत का आश्चर्यों का ज्ञान अधिक होता जाता है उसी क़दर इन्सान अल्लाह तआला के गुणों पर सूचना पा कर क़ुरब हासिल करने के योग्य होता जाता है। तबाबत , हैयत से हज़ारों गुण पता चलते हैं।

चीज़ों के गुणों का ही नाम इल्म है

उलूम हैं ही क्या? केवल चीज़ों के गुणों का ही तो नाम हैं। ग्रह , सितारे , पेड़ पौधों के अगर प्रभाव ना रखता तो अल्लाह तआला

के गुण अलीम पर ईमान लाना इन्सान के लिए मुश्किल हो जाता।

यह एक विश्वसनीय बात है कि हमारे इल्म की बुनियाद चीज़ों के गुण हैं। इस से यह उद्देश्य है कि हम हिक्मत सीखें। उलूम का नाम हिक्मत भी रखा है। अत: फ़रमाया: مَنۡ يُّؤۡتَ الۡحِكۡمَةَ فَقَدۡ اُوۡتِىَ خَيۡرًا كَثِيۡرًا (अलबक़र :270)

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ का उद्देश्य

अत: اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ का उद्देश्य यही है कि इस दुआ के वक़्त उन लोगों के कर्म , आचरण, अक़ाइद की नक़ल करनी चाहिए जो مُنۡعَمٌ عَلَيۡهِمۡ हैं। जहां तक इन्सान से सम्भव हो अक़ाइद , आचरण और कर्मों से काम ले। इस बात को तुम व्यवहार में देख सकते हो कि जब तक इन्सान अपने क़ुवा से काम नहीं लेता वह तरक़्क़ी नहीं कर सकता या उनको असल अत: और मक़सूद से हटा कर कोई और काम उनसे लेता है जिसके लिए वे पैदा नहीं हुए तो भी वह तरक़्क़ी की राह में ना बढ़ेंगे।

अगर आँख को चालीस रोज़ बंद रखा जाए तो उस के देखने की ताक़त समाप्त हो जाएगी। अत: यह ज़रूरी बात है कि पहले क़ुवा को उनके फ़ित्रती कामों पर लगाओ तो और भी मिलेगा। हमारा अपना व्यक्तिगत अनुभव है कि जहां तक व्यावहारिक ताक़तों से काम लिया जाए अल्लाह तआला इस पर बरकत नाज़िल करता है। मतलब यही है कि अव्वल अक़ाइद , आचरण ,कर्मों को दुरुस्त करो। फिर اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ की दुआ माँगो तो इस का असर पूर्ण रूप से ज़ाहिर होगा।

उम्मत मरहूमा के कहने का कारण

खासतौर पर मालूम होता है कि यह उम्मत मरहूमा एक ऐसे ज़माना में पैदा हुई है कि जिसके लिए आफ़ात पैदा होने लगी हैं। इन्सान की हरकत गुनाहों और पापों की तरफ़ ऐसी है जैसे कि एक पत्थर नीचे को चला जाता है। उमत मरहूमा इस लिए कहलाती है कि पापों का ज़ोर हो गया। जैसे कि फ़रमाया अल्लाह तआला ने ظَهَرَ الۡفَسَادُ فِى الۡبَرِّ وَالۡبَحۡرِ (अर्रोम:42) और दूसरी जगह फ़रमाया : يُحۡىِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا (अर्रोम:20) इन सब आयतों पर नज़र करने से मालूम होता है कि इन दोनों आर्यतों में अल्लाह तआला ने दो नक़्शे दिखाए हैं। पहली वर्णन की गई में तो इस ज़माना का जबकि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पैदा हुए थे। इस वक़्त भी चूँकि दुनिया की हालत बहुत ही रहम योग्य हो गई थी। आचरण , कर्म , अक़ाएद सब का नाम-निशान उठ गया था इस लिए इस उम्मत को मरहूमा कहा गया। क्योंकि उस वक़्त बड़े ही रहम की ज़रूरत थी और इसी लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया कि مَاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ(अल्अन्बिया 108) रहम योग्य उस आदमी को कहते हैं जिसे साँपों की ज़मीन पर चलने का हुक्म हो। अर्थात बड़े ख़तरों और बड़ी आफ़तें सम्मुख हूँ। अत: उमत मरहूमा इस लिए कहा कि यह रहम योग्य है। जब इन्सान को मुश्किल काम दिया जाता है तो वह मुश्किल रहम योग्य होती है। शरारतों में अनुभवी , बद-अंदेश ख़ता कारों से मुक़ाबला ठहरा और फिर उम्मी जैसे हज़रत ने फ़रमाया कि हम उम्मी हैं और हिसाब नहीं जानते अत: उम्मीयों को शरीर क़ौमों का मुक़ाबला करना पड़ा जो तदबीरों और शरारतों में अनुभवी थे , इस लिए उस का नाम उम्मत मरहूमा रखा। मुसलमानों को किस क़दर ख़ुश होना चाहिए कि अल्लाह तआला ने उनको रहम योग्य समझा। पहले नबियों की नसीहतें ऐसे वक़्तों में आती थे कि लोग तदबीरों से वाक़िफ़ ना होते और कुछ अपनी ही क़ौम में आते थे लेकिन अब लोग तदबीर और दुनिया के उलूम तथा कलाओं और फ़लसफ़ा व साइंस में पक्के माहिर हैं और सच्चों को इस जहान के ज़ाहिरी उलूम और माद्दी अक़्लों से और उनके पेच दर पेच मन्सूबों और दावों से बहुत कम समानता है। एक हदीस में आया है कि हे ईसा ! मैं तेरे बाद एक उमत को पैदा करने वाला हूं जो ना अक़ल रखेगी और ना इलम। अर्थात उम्मी होगी। आपने अर्ज़ की يَارَبِّ كَيۡفَ يَعۡرِفُوۡنَكَ? हे मेरे अल्लाह! जबकि वे इलम और अक़ल वाले ना होंगे तो तुझे क्योंकर पहचानेंगे? अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मैं अपना इलम और अक़ल दूँगा।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 106 से 109)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत थी कि जब किसी सफ़र से मदीना वापिस तशरीफ़ लाते तो पहले मस्जिद में पहुंच कर दो रकअत नमाज़ अदा करते।

इख़लास तथा वफ़ा की मुर्ति बदरी अस्हाबुन्नबी हज़रत हिलाल बिन उमय्या वाकफ़ी, हज़रत मरारा बिन रबी उमरी और हज़रत उत्बह बिन ग़ज़वान रज़ी अल्लाह अन्हुम की सीरत मुबारका का बयान।

जिहाद बालसीफ़(तलवार से जिहाद) का आरम्भ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रक्षात्मक कार्यवाईयों का वर्णन। कुफ़्फ़ार के हमलों से मुस्लमानों को सुरिक्षत रखने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चार तरीके।

दैनिक अलफ़ज़ल लंदन ऑनलाइन की वेबसाइट का आरम्भ का ऐलान और परिचय

आदरणीया सय्यदा तनवीरुल इस्लाम साहिबा पत्नी आदरणीय मिर्ज़ा हफ़ीज़ अहमद साहिब मरहूम और सिस्टर हाज्जा शकूरा नूरिया साहिबा अमरीका की वफ़ात पर मरहूमीन का ज़िक्र ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 13 दिसम्बर 2019 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टलफ़ोरड (यू. के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बे में मैं हज़रत हिलाल बिन उमय्या रज़ि का वर्णन कर रहा था और इस वर्णन में जंग तबूक का भी वर्णन आ गया। हज़रत हिलाल रज़ि इन तीन पीछे रह जाने वालों में से थे जो इस जंग में शामिल नहीं हुए थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग से वापसी पर उन लोगों से नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया और कुछ सज़ा दी जिस पर ये तीनों बड़े बेचैन थे और अल्लाह तआला के हुज़ूर झुकते हुए इस्तिग़फ़ार और तौबा करते रहे यहां तक कि इन तीन सहाबा का रोना धोना जिनमें हज़रत हिलाल रज़ि भी शामिल थे अल्लाह तआला के हुज़ूर क़बूल हुआ और उनकी माफ़ी के बारे में अल्लाह तआला ने आयत नाज़िल फ़रमाई। बहरहाल इस बारे में यह भी वर्णन हुआ था कि सहाबह रज़ि ने इस जंग की तैयारी के लिए किस क़दर क़ुर्बानियां दी थीं और यह भी वर्णन था कि कुछ और लोग जिनके दिलों में निफ़ाक़ था इस में शामिल नहीं हुए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में झूटे बहाने पेश किए। कुछ ने शुरू में जाने से इनकार किया और आप (स) ने ऐसे मुनाफ़िक़ों का मामला अल्लाह तआला पर छोड़ा। इस क्रम में कुछ और बातें हैं जो मैं इस वक़्त पेश करूँगा।

वे लोग जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ ना जाने को प्राथिमकता दे रहे थे उनमें एक आदमी जद्द बिन क़ैस था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस से फ़रमाया कि तुम रोमियों से जंग के लिए हमारे साथ नहीं चलोगे? उसने यह बहाना बनाया कि वह औरतों की वजह से फ़ित्ने में पड़ सकता है इसलिए उसे आज़माईश में ना डाला जाये। अत: आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस से आराज़ किया और उसे इजाज़त दे दी। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत भी नाज़िल फ़रमाई कि

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ بِالْكَافِرِيْنَ

(अत्तौब: 49)और उनमें से वह भी है जो कहता है कि मुझे रुख़स्त दे और मुझे फ़ित्ना में ना डाल। ख़बरदार वह फ़ित्ना में पड़ चुके हैं और यक़ीनन जहन्नुम काफ़िरों को हर तरफ़ से घेर लेने वाली है।

मदीना के एक यहूदी का नाम सोवैयलम था। वह मदीना के इलाक़े जासूम में रहता था जिसको बेअरे जासिम भी कहते हैं । यह मदीने में सीरिया की तरफ अबुल हशीम बिन तिहाना का कुआं बिन तैहानह का कुँआं था। इस का पानी बहुत अच्छा था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इस पानी को पिया और पसन्द फ़रमाया।

इस यहूदी का घर मुनाफ़िक़ों का गढ़ था। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर मिली कि मुनाफ़क़ीन वहां इकट्ठे हो रहे हैं और वे लोगों को जंग तबूक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जाने से रोक रहे हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि को फ़रमाया कि इन लोगों के पास जाओ और उनसे जा कर इन बातों के बारे में पूछो जो उन्होंने कही हैं। अगर वे उनसे इनकार करें तो उन्हें बता देना कि मुझे ख़बर पहुंची है तुम ने ये ये कहा है। जब हज़रत अम्मार रज़ि वहां पहुंचे और उन्होंने वे सब कहा तो वे लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आकर क्षमा मांगने लगे।

(अस्सीरतुन्नबिवय्या ले इब्ने हिश्शाम पृष्ठ 597 जंग तबूक, दार इब्न हज़म बेरूत 2009 ई)

(अस्सीरतुल हलिबया भाग 3 पृष्ठ 186 वर्णन मुग़ाज़ी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2002 ई)

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 1 पृष्ठ 390 ज़िक्र अलबिआर इल्लती शर्ब मिनहो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1990 ई)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 84 प्रकाशन ज़व्वार अकैडमी पब्लीकेशन्ज़ कराची 2003 ई)

उनकी इस हालत को अल्लाह तआला ने इन शब्दों में बयान फ़रमाया है कि

يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ
اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿۶۵﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ؕ
قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۶۶﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ
اِيْمَانِكُمْ ؕ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةً بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۶۷﴾

(अत्तौबा:64 से 66)

कि मुनाफ़िक़ डरते हैं कि उनके ख़िलाफ़ कोई सूरत नाज़िल ना कर दी जाए जो उनको इस से सुचित कर दे जो उनके दिलों में है। तो कह दे कि बेशक उपहास करते रहो। यह डरने का वर्णन भी उपहास पूर्ण रूप में करते हैं। अल्लाह तो यक़ीनन ज़ाहिर कर के रहेगा जिसका तुम्हें ख़ौफ़ है और अगर तो उनसे पूछे तो ज़रूर कहेंगे कि हम तो केवल गपशप में डूबे थे और खेलें खेल रहे थे। तो पूछ क्या अल्लाह और इस के निशानों और इस के रसूल से तुम उपहास कर रहे थे? कोई बहाना पेश ना करो यक़ीनन तुम अपने ईमान लाने के बाद काफ़िर हो चुके हो। अगर हम तुम में से किसी एक गिरोह से दरगुज़र करें तो किसी दूसरे गिरोह को अज़ाब भी दे सकते हैं। इसलिए कि वह यक़ीनन मुजरिम हैं।

बहरहाल उस वक़्त ये हालात थे। कुछ जाने से पहले मंसूबे बन रहे थे कि ना जाया जाए। मुनाफ़क़ीन उनमें शामिल थे यहूदी उनको उभार रहे थे। कुछ वैसे बहाने बनाते रहे और बाद में वापसी पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में बहाने बनाए। बहरहाल आप (स) ने उनका मामला अल्लाह तआला पर छोड़ा।

जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंग तबूक से वापस लौटे और

मदीने के क़रीब पहुंचे तो आप (स) ने फ़रमाया मदीने में कुछ लोग ऐसे हैं कि वे हर सफ़र और हर वादी मैं तुम्हारे साथ थे। सहाबा ने अर्ज़ किया हे अल्लाह के रसूल! जबकि वे मदीने में हैं तो फिर किस तरह साथ हो गए ? आप (स) ने फ़रमाया हाँ वे मदीना में ही हैं मगर उन्हें किसी बहाने ने या किसी मर्ज़ ने रोक लिया था।(मस्नद अल- इमाम अहमद बिन हंबल जिल्द 4 पृष्ठ 263 मस्नद अनस बिन मालिक रज़ि हदीस 12032 प्रकाशन आलेमुल कुतुब बेरूत लबनान 1998 ई)(मस्नद अल-इमाम अहमद बिन हनबल जिल्द 5 पृष्ठ 132 मस्नद जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि हदीस 14731 प्रकाशन आलेमुल कुतुब बेरूत लबनान 1998 ई) ये लोग ऐसे थे जिनका उज्र भी जायज़ था और उनकी बामारी थी या कोई कारण बन गया जिसकी वजह से बावजूद इच्छा के वे नहीं जा सके। इसलिए अल्लाह तआला ने उन्हें तुम्हारे साथ ही रखा।

तबूक से वापसी के सफ़र में एक अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं जल्दी जा रहा हूँ। अत: तुम में से जो चाहे मेरे साथ जल्दी चले और जो चाहे ठहर जाए अर्थात आराम से पीछे आता रहे। रावी कहते हैं फिर हम रवाना हुए यहां तक कि हमें मदीना दिखाई दिया तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह ताबह है अर्थात पवित्र और ख़ुश करने वाला और यह उहद है यह ऐसा पहाड़ है कि वह हमसे मुहब्बत करता है और हम इस से मुहब्बत करते हैं। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अन्सार के घरों में बेहतरीन घर बनू नज्जर का घर है। फिर बनू अब्दुल अशहल का घर है फिर बनू अब्दुल हारिस बिन ख़ज़रज का घर है। फिर बनू साअदह का घर और आप (स) ने अन्सार के सब घरों को अच्छा क़रार दिया। हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि हमसे आ मिले। रावी बयान कर रहे हैं तो अबू उसैद रज़ि ने कहा क्या तुम्हें मालूम है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अन्सार के घरों की फ़ज़ीलत बयान की है और हमें आख़िर पर रखा है। हज़रत सआद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास गए और निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह!आप (स) ने अन्सार के घरों की फ़ज़ीलत बयान की है और हमें आख़िर पर रखा है। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं कि तुम ख़ैर वालों में से हो? यह सही मुस्लिम की रिवायत है।

(सही मुस्लिम किताबुल फ़ज़ाइल बाब फ़ी मुजज़ाते न्नबी1392)

वापसी पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्वागत के लिए मदीना के लोग क्या मर्द और क्या औरतें और क्या बच्चे मदीने से बाहर सनीय्यतुल विदा के पास आए, वहां पहुंचे हुए थे। सनीय्यतुल विदा मदीना के क़रीब एक स्थान है और मदीना से मक्का जाने वालों को इस स्थान तक आकर अलविदा कहा जाता था। इसलिए उस को सनीय्यतुल विदा कहते थे। इतिहासकारों, सीरत लिखने वालों के नज़दीक जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का से हिज्रत कर के जब आप (स) क़बा की तरफ़ से मदीना तशरीफ़ लाए तो मदीना के इस तरफ से भी सनीय्यतुल विदा में थे। हज़रत आयशा रज़ि की रिवायत के अनुसार वहां मदीना के बच्चों ने आपका स्वागत किया और लड़कियां यह गा रही थीं कि

طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاعِ
وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا مَا دَعَى لِلّٰهِ دَاعِ

कि चौदहवीं की रात का चांद हम पर सनिय्यतुल की तरफ से उदय हुआ। हम पर अल्लाह का शुक्र वाजिब हो गया है जब तक कि अल्लाह का कोई ना कोई पुकारने वाला रहेगा। कुछ हदीस की व्याख्या करने वाले जैसे अल्लामा इब्न हिज्र असकलानी बुख़ारी की शरह करने वाले हैं। बुख़ारी की शरह (व्याख्या) लिखी है। उनका विचर है कि मुमकिन है कि जिन अशआर का वर्णन हज़रत आयशा रज़ि से बयान की गई रिवायतों में है, जो मैंने पढ़ी है। उनका सम्बन्ध आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जंग तबूक से वापसी के वक़्त से हो क्योंकि उस वक़्त सनीयतुल विदा स्थान पर लोगों और बच्चों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्वागत किया था क्योंकि सीरिया देश की तऱप से आने वालों का स्वागत उसी जगह से किया जाता था। जब मदीना वालों को नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जंग तबूक से वापसी का एलान हुआ तो वे ख़ुशी से नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्वागत करने के लिए मदीने से बाहर इस स्थान पर निकले जैसा कि हज़रत साइब बिन यज़ीद वर्णन करते हैं कि मुझे याद है कि मैं भी दूसरे बच्चों के साथ उस वक़्त आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्वागत करने सनीय्यतुल विदा गया था जब आप जंग तबूक से वापस तशरीफ़ ला रहे थे। इमाम बीहक़ी ने भी यह वर्णन किया है कि बच्चों ने नबी ंकरीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इन अशआर के द्वारा स्वागत किया था जब नबी ंकरीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंग तबूक से मदीना वापस तशरीफ़ लाए थे।(मुअज्जमुल बुलदान भाग 2 पृष्ठ 100 सनीय्यतुल विदा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत) (उद्धरित जुस्तजूए मदीना पृष्ठ 403-404 प्रकाशन ओरीएंटल पब्लीकेशन्ज़ लाहौर 2007 ई)(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 267)बहरहाल इतिहसकारों और सीरत लिखने वालों की दोनों किस्म की राए मौजूद हैं अर्थात कुछ के नज़दीक यह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिजरत मदीना के वक़्त और कुछ के नज़दीक जंग तबूक से वापसी पर यह अशआर पढ़े थे।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत थी कि जब किसी सफ़र से मदीना वापस तशरीफ़ लाते तो पहले मस्जिद में पहुंच कर दो रकअत नमाज़ अदा करते। अत: जब आप (स) तबूक से वापस तशरीफ़ लाए तो मदीना में चाशत के वक़्त दाख़िल हुए और पहले मस्जिद में दो रकअत नमाज़ अदा की।

(मस्नद अल-इमाम अहमद बिन हंबल जिल्द 5 पृष्ठ 414 मस्नद कअब बिन मालिक रज़ि हदीस 15865 प्रकाशन आलेमुल कुतुब बेरूत 1988 ई)

नमाज़ के बाद आप (स) लोगों के लिए मस्जिद में तशरीफ़ फ़र्मा हुए उस के बाद दो नफ़ल पढ़ने के बाद वहीं बैठ गए और इस वक़्त वे लोग भी आप (स) से मिलने के लिए आए जो जान बूझ कर पीछे रह गए थे। वे जो बिना किसी बहाना के जान-बूझ के पीछे रहने वाले थे वे आप (स) के सामने अपना कोई ना कोई बहाना पेश करते। ऐसे लोगों की संख्या जो थी 80 के क़रीब थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके बहानों की हक़ीक़त जानते हुए भी यह जानते थे कि यह ग़लत बहाने कर रहे हैं उस के बावजूद उनके ज़ाहिरी बयानों को क़बूल फ़रमाते और उनसे दरगुज़र फ़रमाते रहे और उनकी बैअत भी लेते रहे और उनके लिए इस्तिग़फ़ार भी करते रहे।

(उद्धरित सही अल-बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब हदीस कअब बिन मालिक हदीस 4418)

लेकिन जैसा कि पहले विस्तार से वर्णन हो चुका है हज़रत हिलाल बिन उमय्या रज़ि हज़रत मुरारा बिन रबीइ रज़ि और हज़रत काब बिन मालिक रज़ि ने कोई झूठा बहाना नहीं किया और इस की वजह से कुछ समय आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नाराज़गी को बर्दाश्त किया। बड़े रोते रहे, गिड़गिड़ाते रहे, अल्लाह तआला के हुज़ूर तौबा करते हुए झुके रहे और फिर अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में उनकी तौबा क़बूल करने का ऐलान भी फरमा दिया।

दूसरे सहाबी जिनका वर्णन होगा वह हज़रत मुरारा बिन रबी अमरी रज़ि हैं। हज़रत मुरारह रज़ि के पिता का नाम रबीअ बिन अदी था। उनके पिता का नाम रिब्बिय्या और रबी भी वर्णन किया जाता है। हज़रत मुरारा बिन रबी अमरी रज़ि का सम्बन्ध अन्सार के क़बीला औस के ख़ानदान बनू अमरो बिन औफ़ से था जबकि एक रिवायत के अनुसार उनका सम्बन्ध बनू अमरो बिन औफ़ के इत्तिहादी क़बीला क़ुज़ाअह से था। क़ुज़ाअह अरब का एक मशहूर क़बीला है जो मदीने से दस मंज़िल पर वादी अलक़ुरा से आगे स्थित है और मदाइन सालिह के पश्चिम में है।

(असदुल ग़ाबह फ़ी तमीईज़िस्सहाब: जिल्द 5 पृष्ठ 129 मुर्अरह बिन रबी दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2003 ई)

(अलासाबा फ़ी मारफ़तुल सहाब भाग 6 पृष्ठ 52 मुर्अरह बिन रबी दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1995 ई)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 237 प्रकाशन ज़व्वार अकैडमी पब्ली केशन्ज़ कराची 2003 ई)

हज़रत मुरारह रज़ि को जंग बदर में शामिल होने की सआदत नसीब हुई। इमाम बख़ारी और सहाबा रज़ि के हालात पर आधारित किताबों में उनके जंग बदर में शामिल होने का वर्णन मिलता है जबकि इब्न हिश्शाम ने बदरी सहाबा की सूचि में उनका नाम नहीं लिखा है। यह उन तीन अन्सार सहाबा में से थे जो जंग तबूक में शामिल ना हो सके थे जिनका पहले वर्णन हो चुका है और जिनके बारे में अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम की यह आयत भी नाज़िल फ़रमाई थी कि

وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا حَتّٰى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّا اِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ

(अत्तौबा:118)और उन तीनों पर भी अल्लाह तौबा क़बूल करते हुए झुका जो पीछे छोड़ दिए गए यहां तक कि जब ज़मीन उन पर बावजूद फ़राख़ी के तंग हो गई और उनकी जानें तंगी महसूस करने लगीं और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से पनाह की कोई जगह नहीं मगर उसी की तरफ़ फिर वह उन पर क़बूलीयत की तरफ़

झुकते होते हुए झुक गया ताकि वे तौबा कर सकें। यक़ीनन अल्लाह ही बार-बार तौबा क़बूल करने वाला और बार-बार रहम करने वाला है।

जैसा कि पहले यह वर्णन हो चुका है कि यह तीनों पीछे रह जानेवाले सहाबा हज़रत कअब बिन मालिक रज़ि, हज़रत मरारा बिन रबीइ रज़ि और हज़रत हिलाल बिन उमय्या रज़ि थे और ये तीनों अन्सार से थे

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब हदीस कअब बिन मालिक हदीस 4418)

(असदुल ग़ाबह फ़ी तमीईज़िस्सहाब: जिल्द 5 पृष्ठ 129 मुर्अरह बिन रबी दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2003 ई)

इस हवाले से हज़रत मुरारह रज़ि का अलग कोई वर्णन नहीं है हज़रत कअब बिन मालिक रज़ि का ही विस्तार से वर्णन है जो हज़रत हिलाल बिन उमय्या रज़ि के सम्बन्ध में पिछले ख़ुत्बा में वर्णन कर चुका हूँ इसलिए दोबारा यहां वर्णन की ज़रूरत नहीं है।

अगले सहाबी जिनका वर्णन है उनका नाम है हज़रत उत्बह बिन ग़ज़वान। उनकी कुनिय्यत अबू अब्दुल्लाह और अबू ग़ज़वान थी। हज़रत उत्बह क़बीला बनू नौफ़ल बिन अबदे मुनाफ़ के हलीफ़ थे। हज़रत उत्बह के पिता का नाम ग़ज़वान बिन जाबिर था। हज़रत उत्बह की कुनिय्यत अबू अब्दुल्लाह के अतिरिक्त अबू ग़ज़वान भी वर्णन की जाती है जैसा कि वर्णन हुआ। हज़रत उत्बह ने अर्दह बिनत हारिस से शादी की थी। हज़रत उत्बह ख़ुद वर्णन करते हैं कि मैं उन लोगों में से सातवाँ था जो सबसे पहले इस्लाम क़बूल कर के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हुए थे। इब्न असीर के अनुसार हज़रत उत्बह ने जब हब्शा की तरफ़ हिज्रत की तो उस वक़्त उनकी उम्र चालीस साल थी जबकि इब्न सअद के अनुसार हिज्रत मदीना के वक़्त वह चालीस साल के थे। बहरहाल वह हब्शा से मक्का वापस आए जबकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अभी मक्का में ही मुक़ीम थे। हज़रत उत्बह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मुक़ीम रहे यहां तक कि उन्होंने हज़रत मिकदाद के साथ मदीना की तरफ़ हिज्रत की और ये दोनों आरम्भिक इस्लाम क़बूल करने वालों में थे।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मारफ़तुल सहाबह जिल्द 3 पृष्ठ 558-559 दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2003 ई)

(अत्तबक़ातुल कुब्रा ले इब्ने साद जिल्द 3 पृष्ठ 72 मन हलफ़ा बनी नौफ़ल बिन अब्द मुनाफ़ दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत ,1990 ई)

(इमताउल असमाअ भाग 6 पृष्ठ 331 फ़सल फ़ी ज़िक्रे मवाली रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बेरूत 1999 ई)

हज़रत उत्बह बिन ग़ज़वान और हज़रत मिकदाद बिन असवद रज़ि दोनों की मदीना की तरफ़ हिज्रत की घटना इस तरह है कि मक्का से वे दोनों मुशरिकीन क़ुरैश के लश्कर के साथ निकले ताकि मुस्लमानों के साथ शामिल हो सकें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबैदह बिन हारिस के नेतृत्व में मुस्लमानों का एक लश्कर सनी्यतुल मरीयह , राबग़ शहर के उत्तर पूर्व में लगभग 55 किलो मीटर की दूरी पर है और मदीना मुनव्वरा से इस की दूरी लगभग दो सौ किलो मीटर है। यह उस की तरफ़ रवाना हुए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह लश्कर रवाना फ़रमाया। क़ुरैश के लश्कर की क़ियादत इकरमा बिन अबुजहल कर रहा था। इन दोनों गिरोहों के बीच लड़ाई ना हुई सिवाए एक तीर के जो हज़रत सइद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि ने चलाया था और वह ख़ुदा की राह में पहला तीर था जो चलाया गया। इस दिन उत्बह बन ग़ज़वान और हज़रत मिकदाद भाग कर मुसलमानों के साथ जा मिले।(एटलस सीरतुन नबवी,सरिया उबैदा हारिस पृष्ठ 196 प्रकाशन दारुस्सालम)(अल्इस्तेयाब फ़ी मारफ़तुस्सहाब भाग 4 पृष्ठ 1480-1481 मिकदाद बिन अस्वद दारुल जैल बेरूत)यह इस क़ाफ़िला में आए तो काफ़िरों के साथ थे लेकिन जैसा कि पहले हज़रत मिकदाद के बारे में वर्णन हो चुका है यह इधर आ गए।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन में तारीख़ी किताबों से ले के जिहाद बिस्सैफ (तलवार का जिहाद) का आरम्भ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की राक्षत्मक कार्यवाईयों का वर्णन करते हुए इस तरह वर्णन फ़रमाया है कि जिहाद बालसीफ़ की इजाज़त में पहली करानी आयत बारह सफ़र 2 हिज्री को नाज़िल हुई। अर्थात दिफ़ाई जंग के ऐलान का जो ख़ुदाई इशारा हिज्रत में किया गया था उस का ऐलान सफ़र 2 हिज्री को किया गया जबकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ियाम मदीना की आरम्भिक कार्यवाईयों से फ़ारिग़ हो चुके थे और इस तरह जिहाद का आरम्भ हो गया। तारीख़ से पता लगता है कि कुफ़्फ़ार के शर से मुस्लमानों को सुरक्षित रखने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आरम्भ में चार तरीके दारण किए थे जो आप (स) की उच्च सयासी क़ाबलियत और जंगी दूर बीनी की एक दलील है, बड़ी खुली दलील है और वे तरीके थे:

पहला यह कि आप (स) ने ख़ुद सफ़र करके आसपास के क़बीलों के साथ आपसी अमन के मुआहिदे करने शुरू किए ताकि मदीने के इर्दगिर्द का इलाक़ा ख़तरे से सुरिक्षत हो जाएगा। इस बात में आप (स) ने ख़ुसूसीयत के साथ इन क़बीलों को सामने रखा जो क़ुरैश के शाम के रास्ते के आसपास आबाद थे क्योंकि जैसा कि हर शख़्स समझ सकता है यही वे क़बीले थे जिनसे क़ुरैश मक्का मुस्लमानों के ख़िलाफ़ ज़्यादा मदद ले सकते थे और जिनकी दुश्मनी मुस्लमानों के लिए बहुत ख़तरे पैदा कर सकती थी।

दूसरा दूसरा क़दम आप (स) ने यह उठाया कि आप (स) ने छोटी छोटी ख़बर वेने वाली पार्टीयां मदीना के चारों तरफ रवाना करनी शुरू फ़रमाएं ताकि आप (स) को क़ुरैश और उन के हलीफ़ों की हरकतों का ज्ञान होता रहे और क़ुरैश को भी यह ख़्याल रहे कि मुस्लमान बे-ख़बर नहीं हैं और इस तरह मदीना अचानक हमलों के ख़तरों से सुरिक्षत हो जाए।

मदीना पहुंचने के बाद तीसरा क़दम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस वक़्त यह उठाया कि इन पार्टीयों के भिजवाने में आप (स) की एक मस्लिहत यह भी थी कि इस के द्वारा मक्का और इस के गिर्द के कमज़ोर और ग़रीब मुस्लमानों को मदीना के मुस्लमानों में आ मिलने का मौक़ा मिल जाए क्योंकि अभी तक मक्का के इलाक़े में कई लोग ऐसे मौजूद थे जो दिल से मुस्लमान थे मगर क़ुरैश के अत्याचारों के कारण से अपने इस्लाम का बरमला इज़हार नहीं कर सकते थे और न अपनी ग़रीबी और कमज़ोरी की वजह से उनमें हिज्रत की ताक़त थी क्योंकि क़ुरैश ऐसे लोगों को हिज्रत से ज़बरदस्ती रोकते थे। अत: क़ुरआन शरीफ़ में ख़ुदा फ़रमाता है

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا

(अन्निसा 76)

अर्थात हे मोमिनो कोई वजह नहीं कि तुम लड़ाई ना करो अल्लाह के धर्म की हिफ़ाज़त के लिए और उन मर्दों और औरतों और बच्चों के लिए जो कमज़ोरी की हालत में पड़े हैं और दुआएं कर रहे हैं कि हे हमारे रब निकाल हमको इस शहर से जिसके बाशिंदे ज़ालिम हैं और हम कमज़ोरों के लिए अपनी तरफ़ से कोई दोस्त और मददगार प्रदान फ़र्मा।

अत: उन पार्टीयों के भिजवाने में एक मस्लिहत यह भी थी कि ताकि ऐसे लोगों को ज़ालिम क़ौम से छुटकारा पाने का अवसर मिल जाए। अर्थात ऐसे लोग क़ुरैश के क़ाफ़िलों के साथ मिले मिलाए मदीना के क़रीब पहुंच जाएं और फिर मुस्लमानों के लश्कर की तरफ़ भाग कर मुस्लमानों में आ मिलीं। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि अत: तारीख़ से प्रमाणित है कि पहला दस्ता ही जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उबैदा बिन अलहारिस की सरदारी में रवाना फ़रमाया था और जिस का इकरिमा बिन अबुजहल के एक गिरोह से सामना हो गया था इस में मक्का के दो कमज़ोर मुस्लमान जो क़ुरैश के साथ मिले मिलाए आ गए थे क़ुरैश को छोड़कर मुसलमानों में आ मिले। अत: रिवायत आती है कि इस मुहिम में जब मुसलमानों की पार्टी लश्कर क़ुरैश के सामने आई तो दो आदमी मिक़दाद बिन अमरो और उत्बह बिन ग़ज़वान जो बनो ज़ुहरा और बनू नौफ़ल के हलीफ़ थे मुशरिकीन में से भाग कर मुसलमानों में आ मिले और ये दोनों आदमी मुसलमान थे और सिर्फ़ कुफ़्फ़ार की आड़ लेकर मुसलमानों में आ मिलने के लिए निकले थे। अत: उन पार्टीयों के भिजवाने में एक उद्देश्य आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह भी थी कि ताकि इस तरह से लोगों को ज़ालिम क़ुरैश से छुटकारा पाने और मुस्लमानों में आ मिलने का मौक़ा रहे।

चौथा जो तरीका था वह आप (स) ने यह दारण फ़रमाया कि आपने क़ुरैश के इन तिजारती क़ाफ़िलों की रोकथाम शुरू फ़र्मा दी जो मक्का से शाम की तरफ़ आते-जाते हुए मदीने के पास से गुज़रते थे। क्योंकि पहली बात तो ये कि ये क़ाफ़िले जहां जहां से गुज़रते थे मुस्लमानों के ख़िलाफ़ शत्रुता की आग लगाते जाते थे और ज़ाहिर है कि मदीने के गिर्द में इस्लाम की शुत्रता का बीज बोया जाना मुस्लमानों के

लिए बहुत ख़तरनाक था।

दूसरा यह कि ये क़ाफ़िले हमेशा मसला होते थे और हर शख़्स समझ सकता है कि इस किस्म के क़ाफ़िलों का मदीने से इस क़दर क़रीब हो कर गुज़रना हरगिज़ ख़तरे से ख़ाली नहीं था। और तीसरी बात यह कि क़ुरैश का गुज़ारा ज़्यादा-तर व्यापार पर था और उन हालात में क़ुरैश को अधीन करने और उनको उनकी ज़ालिमाना कार्यवाईयों से रोकने और सुलह पर मजबूर करने का यह सबसे ज़्यादा यक़ीनी और तेज़ प्रभाव डालने वाला माध्यम था कि उनकी तिजारत का रास्ता बंद कर दिया जाए। अत: तारीख़ इस बात पर गवाह है कि जिन बातों ने अन्तमें क़ुरैश को सुलह की तरफ़ झुकने पर मजबूर किया उनमें उनके तिजारती क़ाफ़िलों की रोकथाम का बहुत बड़ा दख़ल था। अत: यह एक निहायत बुद्धि वाला तरीका था जो अपने वक़्त पर कामयाबी का फल लाया।

फिर यह भी कि क़ुरैश के इन क़ाफ़िलों का लाभ कई बार इस्लाम को मिटाने की कोशिश में खर्च होता था बल्कि कुछ क़ाफ़िले तो विशेष रूप से इसी उद्देश्य से भेजे जाते थे कि उनका सारा लाभ मुस्लमानों के ख़िलाफ़ इस्तिमाल किया जाएगा। इस अवस्था में हर शख़्स समझ सकता है कि इन क़ाफ़िलों की रोकथाम ख़ुद अपनी ज़ात में भी एक बिलकुल जायज़ उद्देश्य थी।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रजि एम-ए पृष्ठ 323-324)

सिरया उबैदा बिन हारिस रज़ि जिसमें हज़रत उत्बह क़ुरैश के लश्कर से निकल कर मुसलमान से जा मिले थे इस का और अधिक वर्णन इस तरह है। कुछ हिस्सा तो मैं पिछले किसी ख़ुत्बे में वर्णन कर चुका हूँ। बहरहाल संक्षेप में यहां वर्णन कर देता हूँ कि रबी उलअव्वल महीने में दो हिज्री के शुरू में आप (स) ने अपने एक क़रीबी रिश्तेदार उबैदा बिन अलहारिस मुतलबी के नेतृत्व में साठ ऊंठ सवार मुहाजिरीन का एक दस्ता रवाना फ़रमाया। इस मुहिम का उद्देश्य भी क़ुरैश मक्का के हमलों की पेशबंदी थी। मैं सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन का ही यह हवाला दे रहा हूँ। अत: जब उबैदा बिन अलहारिस रज़ि और उन के साथी कुछ दूरी तय करके सनीयतुल मरह के पास पहुंचे तो अचानक क्या देखते हैं कि क़ुरैश के दो सौ हथियार लगाए नौजवान इकरिमा बिन अबुजहल की कमान में डेरा डाले पड़े हैं। दोनों पक्ष एक दूसरे के सामने हुए और एक दूसरे के मुक़ाबला में कुछ तीर-अंदाज़ी भी हुई लेकिन फिर मुशरिकीन का गिरोह यह ख़ौफ़ खा कर कि मुस्लमानों के पीछे कुछ कुमक छुपी होगी उनके मुक़ाबले से पीछे हट गया और मुस्लमानों ने उनका पीछा नहीं किया। अलबत्ता मुशरिकीन के लश्कर में से दो आदमी मिकदाद बिन अमरो और उत्बह बिन ग़ज़वान, इकरिमा बिन अबुजहल की कमान से ख़ुद बख़ुद भाग कर मुस्लमानों के साथ आ मिले और लिखा है कि वे इसी उद्देश्य से क़ुरैश के साथ निकले थे कि मौक़ा पाकर मुस्लमानों में आ मिलें क्योंकि वे दिल से मुस्लमान थे मगर अपमी कमज़ोरी के अपनी कमज़ोरी के क़ुरैश से डरते हुए हिज्रत नहीं कर सकते थे। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने समीक्षा की है कि और संभव है कि इसी घटना ने क़ुरैश को बद-दिल कर दिया हो और उन्होंने उसे बुरा फ़ाल समझ कर पीछे हट जाने का फ़ैसला कर लिया हो। इतिहास में यह वर्णन नहीं है कि क़ुरैश का यह लश्कर जो यक़ीनन कोई व्यापारिक क़ाफ़िला नहीं था और जिस के बारे में इब्न इसहाक़ ने जमीअ अज़ीम अर्थात एक बहुत बड़ा लश्कर के शब्द इस्तिमाल किए हैं, किसी ख़ास इरादे से इस तरफ़ आया था लेकिन यह यक़ीनी है कि उनकी नीयत बख़ैर नहीं थी और यह ख़ुदा का फ़ज़ल था कि मुस्लमानों को चौकस पा कर और अपने आदमियों में से कुछ को मुसलमानों की तरफ़ जाता देखकर उनको हिम्मत नहीं हुई और वह वापस लौट गए और सहाबा क़ो इस मुहिम का यह व्यवहारिक फ़ायदा हो गया कि दो मुसलमान रूहें क़ुरैश के ज़ुल्म से नजात पा गईं।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 328-329)

हज़रत उत्बह बिन ग़ज़वान और उनके आज़ाद किए ग़ुलाम ख़ब्बाब ने जब मक्का से मदीना की तरफ़ हिज्रत की तो क़ुबअ(यह भी एक रिवायत आती है तबक़ातुल कुबरा में के) मुक़ाम पर उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलमा अजलानी के यहाँ निवास किया और जब हज़रत उत्बह मदीना पहुंचे तो उन्होंने हज़रत अब्बाद बिन बिशर रज़ि के यहाँ निवास किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उत्बह बिन ग़ज़वान और हज़रत अबू दुजनह रज़ि के बीच में भाई भाई का सम्बन्ध स्थापित फ़रमाया था।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 73 मन हलफ़ा बनी नौफ़ल बिन अबद मुनाफ़ दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत ,1990 ई) (अस्सीरतुन्नबिवय्या ले इब्ने हिश्शाम पृष्ठ 220 मनाज़िल अल-मुहाजरीन बिल-मदीना प्रकाशन दार इब्न हज़म बेरूत 2009 ई)

हज़रत उत्बबा बिन ग़ज़वान के बारे में कुछ और भी है इंशा अल्लाह तआला उस का बाद में वर्णन करूँगा

इस समय मैं एक तो यह ऐलान करना चाहता हूँ कि दैनिक अलफ़ज़ल की वेबसाइट उन्होंने शुरू की है और इस के बारे में ऐलान करूँगा। इसी तरह दो जनाज़े भी हैं। इन मरहूमीन के बारे में वर्णन करूँगा।

अलफ़ज़ल के106 साल पूरे होने पर लंदन से अलफ़ज़ल ऑनलाइन ऐडीशन का आरम्भ हो रहा है और यह अख़बार दैनिक अलफ़ज़ल से 106 साल पहले हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि की इजाज़त और दुआओं के साथ 18 जून 1913 ई को शुरू फ़रमाया था। पाकिस्तान के बनने के बाद कुछ अरसा लाहौर से प्रकाशित होता रहा। फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के मार्ग दर्शन में यह रब्वह से निकलना शुरू हुआ। इस पुराने उर्दू रोज़नामा अख़बार का लंदन से अलफ़ज़ल ऑनलाइन ऐडीशन दिनांक 13 दिसम्बर 2019 ई से आरम्भ हो रहा है। आज इंशा अल्लाह तआला आरम्भ हो जाएगा जो इंटरनेट के द्वारा दुनिया भर में हर जगह बड़ी आसानी के साथ उपलब्ध होगा। इस की वेबसाइट Alfazlonline.org तैयार हो चुकी है और पहला संस्करण भी इस पर उपलब्ध है। यहां हमारी आई टी की जो केन्द्रीय टीम है उन्होंने उस के लिए बड़ा काम किया है।

इस में अलफ़ज़ल के महत्व और लाभ के हवाले से बहुत कुछ मौजूद है जो इरशाद बारी तआला के विषय के अधीन क़ुरआन करीम की आयतें भी आया करेंगी और फ़रमान रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अधीन अहादीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी होंगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात के उद्धरण भी होंगे। इसी तरह कुछ अहमदी मज़मून लिखने वालों के मज़मून और दूसरे जो प्रमुख मज़मून हैं वे भी होंगे। नज़्में भी अहमदी शायरों की होंगी। यह अख़बार वेबसाइट के इलावा टविटर पर भी मौजूद है एंड्राइड (Android) का एप (app)भी बन गया है। यह क्योंकि अब रोज़ाना शुरू हो गया है तो सोशल मीडीया के इन माध्यमों से भी उर्दू पढ़ने वाले लोगों को लाभ उठाना चाहिए और इसी तरह मज़मून लिखने वाले और शायर भी इस के लिए अपना क़लमी सहयोग करें ताकि अच्छे और तहक़ीक़ी निबन्ध भी इस में प्रकाशित हों। इस वेबसाइट में रोज़ाना के शुमारा की पी डी एफ़ की शक्ल में इमेज फाईल भी मौजूद होगी जिसको पढ़ने के साथ साथ डाउन लोड भी किया जा सकेगा जो प्रिंट की शक्ल में पढ़ना चाहें वे भी पढ़ सकते हैं। बहरहाल इस का आज इंशा अल्लाह आरम्भ हो जाएगा। इसी तरह सोमवार के रोज़ इस में सम्पूर्ण ख़ुत्बा जुम्अ: जो है वह प्रकाशित किया जाएगा और ताज़ा ख़ुत्बे का ख़ुलासा भी बयान हो जाएगा। तो इंशा अल्लाह जुम्अ के बाद इस का आरम्भ हो जाएगा।

दो मरहूमीन हैं जिनका मैं वर्णन करूँगा और जिनके जनाज़े पढ़ाऊंगा इंशा अल्लाह, उनमें से पहला आदरणीया सय्यदा तनवीरुल इस्लाम साहिबा का है जो मुकर्रम मिर्ज़ा हफ़ीज़ अहमद साहिब मरहूम की पत्नी थीं। 7 दिसम्बर को 91 साल की उम्र में यह वफ़ात पा गई हैं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि रजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसिया थीं। उनका ख़ानदानी परिचय इस तरह है। उनके पिता का नाम मीर अब्दुस्सलाम था और यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पुराने और मुख़लिस सहाबी हज़रत मीर हुसामुद्दीन साहिब रज़ि की पड़पोती थीं। हज़रत सय्यद मीर हामिद शाह साहिब रज़ि की पोती थीं और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो की बहू थीं।

हज़रत मीर हुसामुद्दीन साहिब रज़ि बड़े मशहूर सहाबी हैं। आप 1839 ई में स्यालकोट में पैदा हुए थे और स्यालकोट के बड़े प्रसिद्ध हकीम थे। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जब स्यालकोट में रहते थे तो हकीम साहिब दवाई बनाने का काम और मतब किया करते थे। इस ज़माना में हज़रत अकदस की रिहायश उनके मकान के एक हिस्सा में भी रही है और 1877 ई में हज़रत अकदस स्यालकोट तशरीफ़ लाए तो हकीम साहिब के मकान पर एक दावत की तक़रीब में तशरीफ़ ले गए। हज़रत अकदस की वह पाकीज़ा जवानी और नमूना था कि जब हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दावा किया तो वे लोग जो नेक और सईद फ़ितरत थे और फ़हम तथा फ़िरासत के नूर से हिस्सा पाने वालों में से थे उन्होंने आप को क़बूल किया और स्यालकोट के जिन लोगों ने आप को क़बूल किया उनमें से इख़लास तथा वफ़ा में यह घराना भी पहले स्थान पर था।

(उद्धरित अहमद अलैहिस्सलाम सीरत तथा सवानिह (ग़ैर प्रकाशित मुकर्रम सय्यद मुबश्शिर अहमद अय्याज़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 468)

सय्यद मीर हामिद शाह साहिब ने 29 दिसम्बर1890 ई को हज़रत अक़्दस की मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की थी। रजिस्टर बैअत के अनुसार उनका नम्बर 213 है और उनकी पत्नी फ़ीरोज़ा बेगम साहिबा का नम्बर 246 है जिन्हों ने 7 फरवरी 1892 ई को बैअत की थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी किताबों में उनका वर्णन किया है। इज़ाला औहाम में आसमानी फ़ैसला, आईना कमालाते इस्लाम ,तोहफ़ा केसरिया ,सिराज मुनीर ,किताबुल बरिय्या, हकीकतुल वह्य और मल्फ़ूज़ात भाग 5 में कई जगह अपने मख़लसीन, जलसा सालाना के शामिल होने वाले, चंदा देने वाले, जलसा डायमंड जुबली और पुर अमन जमाअत के अन्तर्गत में उनका वर्णन है।

(उद्धरित तीन सौ तेरह अस्हाब सिदक़ सफ़ा लेखक नसरुल्लाह ख़ान नासिर , आसिम जमाली पृष्ठ 42-43)

बहरहाल मुकर्रमा सय्यदा तनवीरुल इस्लाम साहिबा उनकी नस्ल में से थीं और यह 1928 ई में स्यालकोट में पैदा हुईं और फिर जनवरी 1948 ई में उनकी शादी मिर्ज़ा हफ़ीज़ अहमद साहिब से हुई और इस तरह यह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी की बहू बनीं। उनको 1956 ई से लेकर 2008 ई तक विभिन्न समयों में तक़रीबन अड़तालीस साल मर्कज़ी लजना की सैक्रेटरी नुमाइश के तौर पर ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ मिली। इसी तरह और भी उनकी ख़िदमते हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि से उनका बहुत प्यार का सम्बन्ध था। तहज्जुद का बहुत ख़्याल रखने वाली थीं बल्कि उनकी मुलाज़िमा ने बताया कि जिस रात उनकी वफ़ात हुई है इस रात भी तीन बजे के क़रीब तहज्जुद अदा की और फिर सो गईं और इसी हालत में उनकी वफ़ात हो गई। उनकी बेटी कहती हैं कि मुझे बताती थीं कि जब मैं ब्याह कर, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि की बहू बन के इस ख़ानदान में आई तो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि और हज़रत उम्मे नासिर रज़ि ने मुझे इतना प्यार और इज़्ज़त और मुहब्बत दी कि मैके की याद मुझे बिलकुल भूल गई। फिर उन्होंने बहुत हवाले भी दिए। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि के बातें याद थीं और अच्छी याददाश्त थी। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए और रहम फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे।

दूसरा वर्णन हमारी मरहूमा सिस्टर हाज्जा शकोरा नूरिया साहिबा का है। अमरीका की हैं जो 1 दिसम्बर को वफ़ात पा गई थीं। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। आप 1927 ई में पैदा हुई थीं। आरम्भिक ज़माना वाशिंगटन डी सी में गुज़ारा 1960 ई के दशक में आप हाईस्कूल में इतिहास के विषय की टीचर रहीं। बाद में वर्ल्ड हिस्ट्री में एम-ए की डिग्री हासिल की। फिर रिटायरमैंट के बाद उनकी इच्छा थी कि आप प्रोटैस्टैंट मिशनरी बनें लेकिन बाद में जब आपको इस बात का इलम हुआ कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ख़ुदा के बेटे हैं तो आपने दूसरा रास्ता इख़तियार करने का फ़ैसला किया फिर 1968 ई में नियमित रूप से आपने चर्च को भी छोड़ दिया। अमरीका, मैक्सीको और कैनेडा में सफ़र के बाद आपने अफ़्रीक़ा की कई यूनीवर्सिटीयों में अध्ययन के लिए एक साल की छुट्टी ली। फिर यूरोप का सफ़र भी किया। ज़ेहन में उठने वाले धार्मिक सवालों और मस्लों को हल करवाने की तलाश में थीं।

वाशिंगटन डी सी जब वापस आई तो उनका तआरुफ़ मज़हब इस्लाम से हुआ। संयोग से आपकी मुलाक़ात एयरपोर्ट पर अपने एक दोस्त के बेटे से हुई जिन्होंने कुछ समय पहले अहमदियत स्वीकार की थी। इस वक़्त वहां मुकर्रम मीर महमूद अहमद नासिर साहिब होते थे। वह वहां मुकर्रम मीर महमूद अहमद साहिब नासिर से मुलाक़ात करने के लिए मुकर्रम मुबश्शिर साहिब के साथ एयरपोर्ट पर मौजूद थे तो इसी में उनका भी परिचय हो गया। उन्होंने आपको दीन इस्लाम से मुतआरिफ़ करवाया और फिर यह सिलसिला जारी रहा और आहिस्ता-आहिस्ता इस्लाम की तरफ़ माइल होने लगीं और जिस अक़ीदा की आपको तलाश थी वह आपको इस्लाम में नज़र लगा। 1979 ई में आपने ख़्वाब में क़ुरआन करीम के एक नुस्ख़ा और कलिमा शहादत को देखा। इस के बाद आपको यक़ीन हो गया कि इस्लाम और अहमदियत ही हक़ीक़ी मज़हब है। अत: आपने बैअत कर ली। बैअत के बाद आपने मुख़्तलिफ़ हैसियतों से जमाअत की ख़िदमतों को किया। लजना इमा उल्लाह अमरीका के विभिन्न प्रोग्रामों में ना सिर्फ हिस्सा लेतीं बल्कि फ़आल किरदार अदा थीं। 1986 ई में आप वाशिंगटन डी सी मज्लिस की लोकल सदर चुनी गईं जहां पाँच साल तक आपने ख़िदमत सरअंजाम दी और साथ साथ आपको नैशनल नायब सदर के तौर पर भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। इस के इलावा आपको मुख़्तलिफ़ विभोगों में भी ख़िदमत की मिली। 1995 ई में आपको हज करने की तौफ़ीक़ मिली। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल राबे रहमहुल्लाह तआला की हिदायत पर और आपकी रहनुमाई में क़ुरआन करीम की जो पाँच जिल्दों वाली है, Five volume commentary इस के लिए 118 सफ़्हों पर आधारित इंडैक्स तैयार करने वाली टीम में यह शामिल थीं और इस को बनाने में उनका बड़ा किरदार था। लजना और जमाअत के विभिन्न रसालों और मज्लिसों में भी आपने विभिन्न विषयों पर मज़ामीन लिखे। 1997 ई और 1998 ई में इतफ़ाल के लिए हर इतवार वाले दिन क्लासिज़ का आरम्भ किया। नास्रात के लिए अहमदी समर कैंप (summer camp) में कौंसिलर की हैसियत से ख़िदमतें कीं। कई सालों तक आपने अहमदिया नैशनल हियूमन राईट्स कमेटी में भी ख़िदमत दीं जिसके द्वारा आपने निहायत जाँ-फ़िशानी से पाकिस्तानी हुकूमत की तरफ़ से अहमदियों के ख़िलाफ़ होने वाली ज़्यादतियों पर निहायत जामा डाक्यूमैंटस प्रस्तुत किए।

मुकर्रम शमशाद नासिर साहिब वहां के मबलग़ हैं लिखते हैं, लेकिन इन समस्त कामों से बढ़कर आप कहा करती थीं कि तब्लीग़ करना उनकी पहली मुहब्बत थी और हर काम पर अपनी तब्लीग़ी सरगर्मीयों को ही मुक़द्दम रखा करती थीं। कई साल तक आप लजना की नैशनल तब्लीग़ सैक्रेटरी के तौर पर ख़िदमत करती रहीं। रेडीयो और टेलीविज़न के प्रोग्रामों में भी तब्लीग़ क्या करती थीं। इसी तरह यूनीवर्सिटी कैम्पस और गिरजा घरों में भी मुख़्तलिफ़ तब्लीग़ी प्रोग्राम आयोजित करने में सक्रिय किरदार अदा किया करती थीं। जमाअत के लिट्रेचर को मुख़्तलिफ़ एथनिक (ethinic) गिरोहों में तक़सीम करने के लिए भी आपने बाक़ायदा मन्सूबा तैयार किया हुआ था

यह शमशाद साहिब की रिपोर्ट नहीं थी। यह दूसरे हवाले से आई थी। शमशाद साहिब ने जो उनका वर्णन किया है वह इस तरह है। कि सिस्टर शकोरा नूरिया साहिबा पर्दा की बहुत पाबंद थीं। हर वक़त पाकिस्तानी स्टाइल का बुर्का पहन कर रखतीं। उनका बुर्का उनके किसी काम में कभी रुकावट नहीं बना। जमाअत के कामों की वजह से उन्हें कई बार हुकूमती सतह पर सैनेटर्ज़, कांग्रेस मैन इत्यादि से भी मिलना पड़ता था और वहां भी बुर्का पहन कर जाया करती थीं और सारे काम बख़ूबी सरअंजाम देती थीं। तब्लीग़ के कामों में मुबल्लग़ीन किराम की बहुत मदद करती थीं। शमशाद साहिब कहते हैं कि मैं जब यहां नया आया तो मेरे साथ बैठ कर मुझे अमरीका की हिस्ट्री बताई और काम करने में मदद करती थीं। फिर लिखते हैं कि आपको ख़िलाफ़त का बेहद सम्मान था और बड़ा गहिरा जुड़ाव था। अब जब 2018 में अमरीका गया हूँ तो बावजूद बीमारी के व्हेल चेयर पर, बड़ी मुश्किल से, तकलीफ़ से मिलने भी आई थीं। ख़ुत्बे बड़ी बाक़ायदगी के साथ सुनती थीं। शुरू में जब ऐम टी ए नहीं था और कैसेट के द्वारा ख़ुत्बा आता था तो आप ख़ुत्बे का अंग्रेज़ी अनुवाद करने में बहुत मदद क्या करती थीं। नमाज़ बाजमाअत की पाबंद थीं। यह लिखते हैं कि मैंने तो जब भी उन्हें देखा मस्जिद में ही देखा और बाक़ायदगी के साथ मस्जिद में नमाज़ बाजमाअत में शामिल हुआ करती थीं।

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके दर्जात बुलंद करे और अल्लाह तआला ख़िदमत के जज़बे से मामूर और इख़लास तथा वफ़ा में बढ़े हुए ऐसे और लोग भी जमाअत को प्रदान फ़रमाए।

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 03 जनवरी 2020 ई पृष्ठ 05 से 09)

☆ ☆

संशोधन

अख़बार बदर हिन्दी के अंक 1-2 तथा 3 में पृष्ठ 1 में भूलवश तारीख़ 2019 ई लिखी गई है। जब कि यह 2020 ई है नेट संस्करण में इसे ठीक कर दिया गया है। पाठक इसे 2020 ई पढ़ें।

(सम्पादक)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

ख़ुत्बः जुमअः

लोगो क्या तुम समझते हो कि इस वादा के क्या अर्थ हैं? इस का यह अर्थ है कि अब तुम्हें हर एक के मुक़ाबला के लिए तैयार होना चाहिए .....और हर क़ुर्बानी के लिए तैय्यार रहना चाहिए

लोगों ने कहा कि हाँ हम जानते हैं मगर हे रसूलुल्लाह इस के बदला में हमें क्या मिलेगा

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हें ख़ुदा की जन्नत मिलेगी जो उस के सारे इनामों में से बड़ा इनाम है

सब ने कहा कि हमें यह सौदा मंज़ूर है। हे रसूलुल्लाह अपना हाथ आगे करें

आप (स) ने अपना मुबारक हाथ आगे बढ़ा दिया और ये सत्तर जान कुरबान करने वालों की जमाअत एक दिफ़ाई मुआहिदा में आप (स) के हाथ पर बिक गई।

इख़लास तथा वफ़ा के पैकर बदरी अस्हाब उन्नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) हज़रत उत्बः बिन ग़ज़वान और हज़रत साद बिन उबादा रज़ी अल्लाह अन्हुमा की सीरत मुबारका का वर्णन।

सरिया अब्दुल्लाह बिन जह्श नख़ला की तरफ, शहर बस्त्रा की स्थापना और बैअत उक़्बा सानिया का ईमान वर्धक वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 20 दिसम्बर 2019 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टलफ़ोरड (यू. के)

पिछले ख़ुत्बा में सहाबः रज़ि के वर्णन में हज़रत उत्बह बिन गज़वान का वर्णन चल रहा था और वह अभी ख़त्म नहीं हुआ था। इस अन्तर्गत में कुछ और बातें भी हैं जो अब वर्णन करूँगा।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सन 2 हिज्री में अपने फूफेरे भाई हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श के नेतृत्व में एक लशकर नख़ला की तरफ़ भेजा। हज़रत उत्बह भी इस लशकर में शामिल थे। इस लशकर का वर्णन पहले भी कुछ हद तक एक सहाबी के वर्णन में बयान हो चुका है। बहरहाल अब कुछ संक्षिप्त भी बयान कर देता हूँ। सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने यह लिखा है कि

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह इरादा फ़रमाया कि क़ुरैश की हरकत तथा ठहराव का ज़्यादा क़रीब से हो कर ज्ञान प्राप्त किया जाए ताकि उस के बारे में हर किस्म की ज़रूरी सूचना हर समय उपलब्ध हो जाएगी और मदीना हर किस्म के अचानक हमलों से सुरक्षित रहे। अतः इस उद्देश्य से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आठ मुहाजिरीन की एक पार्टी तैयार की और ध्यान रखते हुए इस पार्टी में ऐसे आदमियों को रखा जो क़ुरैश के विभिन्न क़बीलों से सम्बन्ध रखते थे ताकि क़ुरैश के छुपे हुए इरादों के बारे में ख़बर प्राप्त करने में आसानी हो और इस पार्टी पर आप (स) ने अपने फूफेरे भाई अब्दुल्लाह बिन जह्श को अमीर निर्धारित फ़रमाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस लशकर को रवाना करते हुए इस लशकर के अमीर को यह नहीं बताया कि तुम्हें कहाँ और किस उद्देश्य से भेजा जा रहा है। चलते हुए उनके हाथ में एक बंद, मुहर लगा ख़त दे दिया और फ़रमाया कि इस ख़त मैं तुम्हारे लिए हिदायत लिखी हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब मदीना से दो दिन का सफ़र तय कर लो तो फिर उस ख़त को खोल कर उस की हिदायत के अनुसार अनुकरण करना।

जब दो दिन का सफ़र तय कर चुके तो अब्दुल्लाह ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़रमान को खोल कर देखा तो इस में यह शब्द लिखे थे कि तुम मक्का और ताइफ के बीच वादी नख़ला में जाओ और वहां जाकर क़ुरैश के हालात का पता करो और फिर हमें सूचना ला कर दो। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़त के नीचे यह हिदायत भी लिखी थी कि इस मिशन के मालूम होने के बाद अगर तुम्हारा कोई साथी इस पार्टी में शामिल रहने से शंकित हो और वापस चले आना चाहे आर्थात जब यह ख़त देख लो और पढ़ लो और इस गिरोह का अथवा यह लशकर जो भेजा गया है इस का क्या मक़सद है तो उनमें जो शामिल लोग हैं अगर उनमें से किसी को कुछ शंका हो,एतराज़ हो, शंकित हों और अगर वापस आना चाहें तो वापस आ सकते हैं कोई पाबंदी नहीं है। बहरहाल आप (स) ने फ़रमाया उसे वापस आने की इजाज़त दे देना। अब्दुल्लाह ने आप (स) की यह हिदायत अपने साथियों को सुना दी और सब ने एक ज़बान हो कर कहा कि हम ख़ुशी के साथ इस ख़िदमत के लिए हाज़िर हैं। इस के बाद यह जमाअत नख़ला की तरफ़ रवाना हुई। रास्ता में साद बिन अबी वकास रज़ि और उत्बा बिन गज़वान रज़ि का ऊंट खो गया और वे उस की तलाश करते करते अपने साथियों से बिछड़ गए और बावजूद बहुत तलाश के उन्हें ना मिल सके अर्थात अपने साथियों को ना मिल सके और अब यह पार्टी जो गई थी यह सिर्फ़ छः आदमियों की रह गई। इस में सिर्फ छः लोग गए।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने एक मुस्तश्रिक़ है मार्गो लैस उस के बारे में लिखा है कि उसने इस अवसर पर यह लिखा कि साद बिन अबी वकास रजि और उत्बह ने जान-बूझ कर अपना ऊंट छोड़ दिया था और इस बहाना से पीछे रह गए थे। आप लिखते हैं कि इस्लाम पर जान कुरबान करने वाले जिनकी ज़िन्दगी की एक-एक घटना उनकी बहादुरी और फिदा होने पर गवाह है और जिन में से एक जंग बेअरे मऊना में कुफ़्फ़ार के हाथों शहीद भी हुआ और दूसरा कई ख़तरनाक लड़ाइयों में नुमायां हिस्सा लेकर अन्तमें इराक़ का फ़ातिह बना , उनके बारे में इस प्रकार की शंका केवल अपने मन घड़त विचारों की बिना पर करना मिस्टर मार्गो लैस ही का हिस्सा है और फिर मज़ा यह है कि मार्गो लैस अपनी किताब में यह भी दावा करता है कि मैंने यह किताब हर किस्म के द्वेष से पाक हो कर लिखी है।

बहरहाल यह तो उन लोगों का तरीक़ा है जहां भी इस्लाम और मुस्लमानों पर आरोप का अवसर मिले ये मौक़ा हाथ से जाने नहीं देते। अब असल घटना जो लशकर की था उस की तरफ़ आता हूँ।

यह मुस्लमानों की छोटी सी जमाअत थी, जब नख़ला पहुंची और अपने काम अर्थात इन्फ़ार्मेशन लेने, सूचनाएं लेने में व्यस्त हो गई कि कुफ़्फ़ार मक्का की मूवमैंटस (movements) क्या हैं। उनके इरादे क्या हैं। मुस्लमानों के बारे में कोई हमले का इरादा तो नहीं? तो यह ख़बरें लेने में, अपने काम में वे व्यस्त हो गई और उन में से कुछ ने राज़ को छुपाने के ख़्याल से अपने सिर के बाल भी मुंडवा दिए ताकि राहगीर इत्यादि उनको उमरे के लिए आए हुए लोग समझ कर किसी किस्म की शंका ना करें लेकिन एक दिन अचानक वहां क़ुरैश का एक छोटा सा क़ाफ़ला भी आ पहुंचा जो ताइफ से मक्का की तरफ़ जा रहा था और हर दो जमाअतें एक दूसरे के सामने हो गईं। मुस्लमानों ने आपस में मश्वरा किया कि अब क्या करना चाहिए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको ख़ुफ़ीया ख़ुफ़ीया ख़बर लेने के लिए भेजा था, कोई बाक़ायदा हमले के लिए नहीं भेजा था लेकिन दूसरी तरफ़ क़ुरैश से जंग शुरू हो चुकी थी अर्थात आमने सामने हो गए थे और दोनों शत्रु एक दूसरे के सामने थे और फिर कुदरती यह भी चिन्ता थी कि अब जो क़ुरैश के इन क़ाफ़ला वालों ने मुस्लमानों को देख लिया है तो इस ख़बर लेने के लिए जिसके लिए भेजे गए थे उस का राज़ छुपा नहीं रह सकता। एक मुशकिल यह भी थी कि कुछ मुस्लमानों का ख़्याल था कि शायद यह दिन रजब अर्थात हराम महीना का आख़िरी है जिस में अरब के पुराने नियम के अनुसार लड़ाई नहीं होनी चाहिए और कुछ समझते थे कि रजब गुज़र चुका है और शअबान शुरू है और कुछ रिवायतों में है कि यह लशकर जमादी अलआख़िर में भेजा गया था और शक यह था कि यह दिन जमादी का दिन है या रजब का लेकिन दूसरी तरफ़ नख़ला की वादी ठीक हरम के इलाक़ा की हद पर स्थित थी और यह स्पष्ट था कि अगर आज ही कोई फ़ैसला ना हुआ तो कल को यह क़ाफ़ला हर्म के इलाक़ा में दाख़िल हो जाएगा जिसकी हुर्मत यक़ीनी होगी। अतः इन सब बातों को सोच कर मुस्लमानों ने आख़िर यही फ़ैसला

किया कि क़ाफ़िला पर हमला करके या तो क़ाफ़िला वालों को क़ैद कर लिया जाए और या मार दिया जाए। बहरहाल उन्होंने हमला कर दिया जिसके नतीजा में कुफ़्फ़ार का एक आदमी मारा गया और दो आदमी क़ैद हो गए। चौथा आदमी भाग कर निकल गया और मुस्लमान उसे पकड़ ना सके और इस तरह उनकी तजवीज़ सफल होते होते रह गई। इस के बाद मुस्लमानों ने क़ाफ़िला के सामान पर क़ब्ज़ा कर लिया और चूँकि क़ुरैश का एक आदमी बच कर निकल गया था और यक़ीन था कि इस लड़ाई की ख़बर शीघ्र मक्का पहुंच जाएगी तो अब्दुल्लाह बिन जहश और उन के साथी सामान ग़नीमत लेकर शीघ्र मदीना की तरफ़ वापस लौट आए।

इस अवसर पर मार्गो लैस साहिब लिखते हैं कि दरअसल मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह लशकर जानबूझ कर इस नीयत से शहर हराम में भेजा था कि चूँकि इस महीना में क़ुरैश कुदरती रूप से ग़ाफ़िल होंगे ,मुस्लमानों को उन के क़ाफ़ला के लूटने का आसान और यक़ीनी अवसर मिल जाएगा लेकिन हर अक्लमंद इन्सान समझ सकता है कि ऐसी संक्षिप्त पार्टी को इतने दूर दराज़ इलाक़ा में किसी क़ाफ़िला को लूटने के लिए नहीं भेजा जा सकता विशेष रूप से जबकि दुश्मन का हेडक्वार्टर इतना क़रीब हो और फिर यह बात इतहिास से स्पष्ट रूप से साबित है कि यह पार्टी केवल ख़बरें लेने के उद्देश्य से भेजी गई थी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब यह ज्ञात हुआ कि सहाब: रज़ि ने क़ाफ़ला पर हमला किया तो आप सख़्त नाराज़ हुए और जब यग जमाअत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और आप (स) को सारे हालात सुनाए और घटना की सूचना दी तो आप (स) सख़्त नाराज़ हुए और फ़रमाया कि मैंने तुम्हें शहर हराम में लड़ने की इजाज़त नहीं दी हुई और आप (स) ने माल ग़नीमत भी लेने से इनकार कर दिया। इस पर अब्दुल्लाह और उन के साथी सख़्त लज्जित और परेशान हुए। और उन्होंने ख़्याल किया कि बस अब हम ख़ुदा और इस के रसूल की नाराज़गी की वजह से हलाक हो गए। सहाबा रज़ि ने भी उनको सख़्त मलामत की कि तुमने क्या किया।

दूसरी तरफ़ क़ुरैश ने भी शोर मचाया कि मुस्लमानों ने शहर हराम की हुर्मत को तोड़ दिया है और चूँकि जो आदमी मारा गया था अर्थात अमरो बिन अलहिज़रमी वह एक रईस आदमी था और फिर वो उत्बह बन रबीअह रईस मक्का का हलीफ़ भी था इसलिए भी इस घटना ने क़ुरैश की ग़ज़ब की आग को बहुत भड़का दिया और उन्होंने आगे से भी ज़्यादा जोश के साथ मदीना पर हमला करने की तैयारियां शुरू कर दें। अत: इस घटना पर मुस्लमानों और कुफ़्फ़ार हर दो में बहुत बातें हुईं और अन्त में क़ुरआन करीम की यह आयत वह्य हुई, नाज़िल हुई। और इस की वजह से फिर मुस्लमानों की तसल्ली और तश्फ़ी हुई कि

يَسْأَلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ وَّصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ وَكُفْرٌ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِخْرَاجُ أَهْلِهٖ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللهِ وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوْا

(अल बकर 218)

अर्थात लोग तुझ से पूछते हैं कि शहर हराम में लड़ना कैसा है? तो उनको जवाब दे कि बेशक शहर हराम में लड़ना बहुत बुरी बात है लेकिन शहर हराम में ख़ुदा के धर्म से लोगों को ज़बरदस्ती रोकना बल्कि शहर हराम और मस्जिद हराम दोनों का कुफ़्र करना अर्थात उनकी हुर्मत को तोड़ना और फिर हरम के इलाक़ा से इस के रहने वालों को ज़बरदस्ती निकालना जैसा कि हे मश्रिक़ो तुम लोग कर रहे हो ये सब बातें ख़ुदा के नज़दीक शहर हराम में लड़ने की तुलना में भी ज़्यादा बुरी हैं और यक़ीनन शहर हराम में देश के अंदर फ़ित्ना पैदा करना इस क़तल से बुरा है जो फ़ित्ना को रोकने के लिए किया जाए और हे मुसलमानो कुफ़्फ़ार का तो यह हाल है कि वह तुम्हारी शतुत्रा में इतने अंधे हो रहे हैं कि किसी वक़्त और किसी जगह भी वे तुम्हारे साथ लड़ने से रुकेंगे नहीं और वे अपनी यह लड़ाई जारी रखेंगे यहां तक कि तुम्हें तुम्हारे धर्म से फेर दें शर्त यह है कि वे उस की ताक़त पाएं।

अत: इतिहास से साबित है कि इस्लाम के ख़िलाफ़ क़ुरैश के रईस अपने ख़ूनी प्रापेगंडे को हुरमत वाले महीनों में भी बराबर जारी रखते थे बल्कि हुरमत वाले महीनों के इज्तिमाओं और सफ़रों से लाभ उठाते हुए वे इन महीनों में अपनी फसाद वाली कार्यवाईयों में और भी ज़्यादा तेज़ हो जाते थे और फिर कमाल निर्लज्जता से अपने दिल को झूठी तसल्ली देने के लिए वे इज़्ज़त के महीनों को अपनी जगह से इधर उधर फेर भी कर दिया करते थे जिसे वह नसीई के नाम से पुकारते थे और फिर आगे चल कर तो उन्होंने ग़ज़ब ही कर दिया कि सुलह हुदैबिया के ज़माना में बावजूद सुदृढ़ सन्धि के कुफ़्फ़ार मक्का और उन के साथियों ने हर्म के इलाक़ा में मुस्लमानों के एक हलीफ़ क़बीला के ख़िलाफ़ तलवार चलाई और फिर जब मुस्लमान इस क़बीला की हिमायत में निकले तो उनके ख़िलाफ़ भी ठीक हर्म में तलवार इस्तिमाल की। अत: अल्लाह तआला के इस जवाब से अर्थात जो क़ुरआन करीम की आयत है इस से मुस्लमानों की तो तसल्ली होनी ही थी क़ुरैश भी कुछ ठंडे पड़ गए और इस दौरान में उनके आदमी भी अपने दो क़ैदियों को छुड़ाने के लिए मदीना पहुंच गए लेकिन चूँकि अभी तक साद बिन अबी वकास रज़ि और उत्बह बिन ग़ज़वान रज़ि वापस नहीं आए थे तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उनके बारे में शंका थी कि अगर क़ुरैश के हाथ पड़ गए तो क़ुरैश उन्हें ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगे। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी वापसी तक क़ैदियों को छोड़ने से इनकार कर दिया और फ़रमाया कि मेरे आदमी ख़ैरीयत के साथ मदीना पहुंच जाऐंगे तो फिर मैं तुम्हारे आदमियों को छोड़ दूँगा। अत: जब वे दोनों वापस पहुंच गए तो आप (स) ने फ़िद्या लेकर दोनों क़ैदियों को छोड़ दिया लेकिन इन क़ैदियों में से एक आदमी पर मदीना के निवास के दौरान आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उच्च आचरण और इस्लामी शिक्षा की सच्चाई का इतना गहरा असर हो चुका था कि उसने आज़ाद हो कर भी वापस जाने से इनकार कर दिया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर मुस्लमान हो कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मानने वालों में शामिल हो गया। इस्लाम ले आया और अन्त में बेअर मऊना में शहीद हुआ।

(उद्धरित अज़ सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन ऐसफ़हा330ता334)

अत: मार्गो लैस जो आरोप लगा रहे हैं इस के आरोप का जवाब देने के लिए उनका इस्लाम लाना और फिर इस्लाम के लिए क़ुर्बानी देना यही काफ़ी है लेकिन बहरहाल इन चीज़ों को ये लोग नज़र अंदाज कर जाते हैं।

हज़रत उत्बह बिन गज़वान रज़ि को जंग बदर और बाद की समस्त जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल होने की सआदत नसीब हुई

(असदगुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 559 उत्बह बिन गज़वान , दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2003 ई)

हज़रत उत्बह बिन गज़वान रज़ि के दो आज़ाद किए ग़ुलामों ख़ब्बाब और सअद को भी उनके साथ जंग बदर में शरीक होने की सआदत नसीब हुई।

(अल-असाबा फ़ी मअरफितल सहाबा भाग 2 पृष्ठ 439 खब्बाब मौला उत्बह बिन गज़वान दारुल जैल बेरूत 1992 ई)

(अल-असाबा फ़ी मअरफ़तिस्सहाब भाग 2 पृष्ठ 612 सअद मौला उत्बह बिन गज़वान दारुल जैल बेरूत 1992 ई)

हज़रत उत्बह बिन गज़वान रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माहिर तीर अंदाज़ों में से थे।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न साद भाग 3 पृष्ठ 72 मन हलफ़ा बनी नौफ़ल बिन

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

अब्द मुनाफ़ दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1990 ई)

हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत उत्बह को बसरा की तरफ़ रवाना फ़रमाया ताकि वह उबुल्लह मुक़ाम के लोगों से लड़ें जो फ़ारस से हैं। रवाना करते हुए हज़रत उमर रज़ि ने उन्हें फ़रमाया कि तुम और तुम्हारे साथी चलते जाओ यहां तक कि सलतनत अरब की अन्तिम और अजम देश की आरम्भिक सीमा तक पहुंच जाओ। अत: तुम अल्लाह की बरकत और भलाई के साथ चलो। जहां तक तुम से हो सके अल्लाह से डरते रहना और जान लो कि तुम सख़्त दुश्मनों के पास जा रहे हो। फिर आप ने फ़रमाया कि मैं उम्मीद करता हूँ कि अल्लाह तआला उनके ख़िलाफ़ तुम्हारी मदद करेगा। हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया और मैंने हज़रत अला बिन हज़रमी को लिख दिया है कि अरफजह बिन अरकमह तुम्हारी मदद करे क्योंकि वह दुश्मन से लड़ने में बड़ा तजर्बा वाला और जंग के फ़न से ख़ूब वाक़िफ़ है। फिर हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया अत: तुम इस से मश्वरा लेना और लोगों को अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाना । जो शख़्स तुम्हारी बात मान ले उस का इस्लाम क़बूल करना और जो शख़्स ना माने इस पर ज़िज़्या निर्धारित करना जिसको वह ख़ुद अपने हाथ से आजिज़ी के साथ अदा करे और जो इस को भी ना माने तो तलवार से काम लेना अर्थात अपने मज़हब में रह कर वहां रहना। चाहे फिर वह जिज़्या देने को भी ना तैयार हो, मुसलमान भी ना हो और लड़ाई पर भी आमादा हो, तो फिर आप ने फ़रमाया कि फिर तलवार से काम लेना। फिर तुम्हारा भी काम है कि तलवार से काम लो। अरबों में से जिनके पास से गुज़रो उन्हें जिहाद की तरग़ीब देना और दुश्मन के साथ होशियारी से बर्ताव करना और अल्लाह से डरते रहना जो तुम्हारा रब्ब है।

हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत उत्बह को बसरा की तरफ़ आठ सौ आदमियों के साथ रवाना फ़रमाया था। बाद में और मदद भी पहुंचाई। हज़रत उत्बह ने उबुल्लह मुक़ाम को फ़तह किया और इस जगह बसरा शहर की हदबंदी की। आप पहले शख़्स हैं जिन्हों ने बसरा को शहर बनाया और उसे आबाद किया। हज़रत उम्र बिन ख़ताब रज़ि ने जब हज़रत उत्बह बिन गज़वान रज़ि को बसरा पर हाकिम निर्धारित फ़रमाया तो ख़रीबह पर वह ठहरे थे। ख़रीबह फ़ारस का एक पुराना शहर था जिसे फ़ारसी में दहशा बाज़ उरबैज़ कहते थे। अरबों ने उसे ख़रीबह नाम दिया। इस के पास जंग जमल भी हुई थी। हज़रत उत्बह ने हज़रत उमर रज़ि के नाम ख़त में लिखा कि मुस्लमानों के लिए एक ऐसी जगह आवश्यक है जहां वे सर्दीयों का मौसम गुज़ार सकें और जंगों से वापसी पर ठहर सकें। हज़रत उमर रज़ि ने उन्हें लिखा कि उन्हें एक ऐसी जगह जमा करो जहां पानी और चरागाह क़रीब हो। अगर यह मन्सूबा है तो जगह ऐसी होनी चाहिए जहां पानी भी मौजूद हो और जानवरों के लिए चरागाह भी हो। इस पर हज़रत उत्बह ने उन्हें बसरा में जा ठहराया। मुस्लमानों ने वहां बाँस से मकान बनाए किए। हज़रत उत्बह ने बाँस से मस्जिद तामीर करवाई। यह 14 हिज्री की घटना है। हज़रत उत्बह ने मस्जिद के क़रीब ही खुली जगह पर अमीर का घर बनवाया। लोग जब जंग के लिए निकलते तो उन बाँस से बने घरों को उखाड़ते और बांध कर रख जाते और जब वापस आते तो इसी तरह दुबारा घर बनाते। बाद में लोगों ने वहां पक्के मकान बनाने शुरू किए। हज़रत उत्बह ने मिहजिन बिन अदरह को हुक्म दिया जिसने बसरा की जामे मस्जिद की बुनियाद डाली और उसे बाँसों से तैयार किया। इस के बाद हज़रत उत्बह हज करने के लिए निकले और मुजाशिअ बिन मसऊद को जांनशीन बनाया, अपना प्रतिनिधि बनाया और उसे फुरात की तरफ़ कूच का हुक्म दिया और हज़रत मुग़ीर बिन शुअबह रज़ि को हुक्म दिया कि वह नमाज़ की इमामत किया करें। जब हज़रत उत्बह हज़रत उमर रज़ि के पास पहुंचे तो उन्होंने बसरा की वलाएत से अस्तीफ़ा देना चाहा। कह दिया कि अब मेरे लिए बड़ा मुश्किल है किसी और को वहां का अमीर निर्धारित कर दें। परन्तु हज़रत उमर रज़ि ने उनका इस्तीफ़ा मंज़ूर नहीं किया। रिवायत में आता है कि इस पर उन्होंने दुआ की कि अल्लाह! मुझे अब इस शहर की तरफ़ दुबारा ना लौटाना। अत: वह अपनी सवारी से गिर पड़े और 17 हिज्री में उनका देहान्त हो गया। यह उस वक़्त हुआ जबकि हज़रत उत्बह मक्का से बस्रा की तरफ़ जा रहे थे और इस स्थान पर पहुंच गए थे जिसको लोग मिअदिन बनी सुलेम कहते हैं। एक दूसरे कथन के अनुसार 17 हिज्री में रबज़ह स्थान पर उनका देहान्त हुआ था और एक तीसरा कथन भी है। उनकी वफ़ात के बारे में विभिन्न रिवायतें हैं कि17 हिज्री में 57 साल की उम्र पा कर बस्रा में हज़रत उत्बह ने वफ़ात पाई थी। उन्हें पेट की बीमारी थी और कुछ ने उनकी वफ़ात का साल 15 हिज्री भी बयान किया है। हज़रत उत्बह की वफ़ात के बाद उनका ग़ुलाम सोवेद हज़रत उत्बह का सामान और तरका हज़रत उमर रज़ि के पास लाया। हज़रत उत्बह ने 57 वर्ण की उम्र पाई। वह लम्बे क़द वाले और ख़ूबसूरत थे।

(असदगुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 559-560 उत्बह बिन गज़वान, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2003 ई)

(किताब जमल मिन अंसाबिल अशराफ़ भाग 13 नसब बनी माज़िन बिन मंसूर पृष्ठ 298 तथा हाशिया, दारुल फ़िक्र बेरूत 1996 ई)

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 73 उत्बह बिन गज़वान दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1990 ई)

ख़ालिद बिन अमीर अदवी वर्णन करते हैं कि हज़रत उत्बह् बिन गज़वान रज़ि ने हमें ख़िताब किया। उन्होंने अल्लाह की प्रशंसा की। फिर कहा अम्मा बअद दुनिया ने अपने ख़त्म होने का ऐलान कर दिया है और उसने तेज़ी से पीठ फेर ली है अर्थात दुनिया अब क़यामत की तरफ़ बढ़ रही है और इस में कुछ भी बाक़ी ना रहा सिवाए उस के कि जितना बर्तन में कुछ पीना बच रहता है जिसे उस का पीने वाला छोड़ देता है। तुम यहां से एक लाज़वाल घर की तरफ़ मुंतक़िल होने वाले हो अर्थात यह ज़िन्दगी अस्थायी है। अत: जो तुम्हारे पास है इस से बेहतर में मुंतक़िल हो जाओ क्योंकि हमारे पास वर्णन किया गया है कि एक पत्थर जहन्नुम के किनारे से फेंका जाएगा फिर वह सत्तर बरस तक इस में गिरता जाएगा और इस की तह तक ना पहुंच पाएगा और अल्लाह की क़सम इस दोज़ख़ को ज़रूर भरा जाएगा। अर्थात कि गुनाहगारों को ऐसी जहन्नुम में फेंका जाएगा। इसलिए अवसर है इस ज़िन्दगी से लाभ उठाओ और नेकियों की तरफ़ ध्यान दो। यह मक़सद था आप का। फिर फ़रमाया क्या तुम ताज्जुब करते हो? और तुम्हें बताया गया कि जन्नत के दो किवाड़ों में से एक किवाड़ से दूसरे किवाड़ तक चालीस वर्ष की दूरी है और ज़रूर इस पर एक ऐसा दिन आएगा कि वह लोगों की प्रचुरता से भर जाएगी। मैंने अपने आप को देखा है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सात में से एक था और कभी दरख़्तों के पत्तों के सिवा हमारा कोई खाना नहीं था अर्थात वह ज़माना हम पर आया था कि जब हमारी बहुत बुरी हालत थी। दरख़्तों के पत्ते हम खाया करते थे। यहां तक कि हमारी बाछें ज़ख़्मी हो गईं। फिर आप कहते हैं अपनी घटना सुना रहे हैं कि मुझे एक चादर मिली और उसे फाड़ कर अपने और सआद बिन मालिक के लिए दो टुकड़े कर लिए। यह हालत थी हमारी कि पूरी तरह ढाँकने के लिए चादर भी नहीं थी। आधे का मैंने अपने जिस्म को लपेटने के लिए इज़ार बना लिया और आधे का सआद ने। आप ने फ़रमाया लेकिन आज हम में से कोई सुबह करता है तो किसी शहर का अमीर होता है और मैं इस बात से अल्लाह की पनाह में आता हूँ कि मैं अपने नफ़्स में बड़ा समझूं और अल्लाह के नज़दीक बहुत छोटा हूँ। इसलिए आप ने फ़रमाया कि मेरी तो आजज़ी की यह अवस्था है कि मैं अपने आपको बहुत छोटा समझता हूँ। हालात अब तबदील हो गए हैं। सुविधाएं पैदा हो गई है और अब तुम लोगों को बहुत ज़्यादा फ़िक्र करनी चाहिए

फिर फ़रमाया कोई नबुव्वत भूतकाल में ऐसी नहीं हुई जिसका असर नष्ट ना हुआ हो यहां तक कि इस का अंजाम बादशाहत ना हो और तुम हक़ीक़त हाल जान लोगे

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

और हुक्काम का तुम्हें हमारे बाद अनुभव हो जाएगा।

(सही मुस्लिम किताबुल ज़ुहद वलरिकाक 2967)

आप ने फ़रमाया कि मुस्लमानों में भी ऐसे हालात आ जाएगी कि दुनियादारी पैदा हो जाएगी। इस वक़्त तुम देख लेना कि जो मैं कह रहा हूँ वह सही है लेकिन तुम लोग हमेशा ख़ुदा तआला की तरफ़ ध्यान रखना, धर्म की तरफ़ ध्यान रखना, रूहानियत की तरफ़ ध्यान रखना और इसी से जन्नत में जाने के सामान पैदा हो सकते हैं।

अगले सहाबी जिनका वर्णन है उनका नाम हज़रत साद बिन उबादह रज़ि है। हज़रत साद बिन उबादह रज़ि का सम्बन्ध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू साआदा से था। उनके पिता का नाम उबैदा बिन दुलैम और माता का नाम अमरह था जो कि मसऊद बिन कैस की तीसरी बेटी थीं। उनकी माता को भी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत करने की सआदत नसीब हुई। हज़रत साअद बिन उबअदा रज़ि हज़रत सअद बिन ज़ैद अशहली ख़लेरे भाई थे जो कि बदर वालों में से थे। हज़रत सअद रज़ि ने दो शादियां की थीं। गज़यिह बिन्त सअद जिस से सईद, मुहम्मद और अब्दुर रहमान पैदा हुए और दूसरी फ़ुकैह: बिन्त उबैद जिससे क़ैस, उमामा और सदूस की पैदाइश हुई।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न साद भाग 3 पृष्ठ 460-461 सअद बिन उबैदा, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1990 ई)

मनदूस बिन्त उबादा हज़रत साद बिन उबादा रज़ि की बहन थीं जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत कर के इस्लाम क़बूल किया था। हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि की एक और बहन भी थीं जिनका नाम लैला बिन्त उबादा था। उन्होंने भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत कर के इस्लाम क़बूल किया था।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 8 पृष्ठ 277 व मन बनी साइदह अब बिन अलख़ज़रज, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत1990 ई)

हज़रत साद बिन उबादह रज़ि की कुनिय्यत अबू साबित थी। कुछ ने उनकी कुनिय्यत अब्बू केस भी वर्णन की है जबकि पहला कथन दरुस्त और सही लगता है अर्थात अब्बू साबित। हज़रत साद बिन उबादह रज़ि अन्सार के क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू साआदा के नक़ीब थे। हज़रत साद बिन उबादह रज़ि सरदार और सख़ी थे और तमाम जंगों में अन्सार का झंडा उनके पास रहा। हज़रत साद बिन उबादह रज़ि अन्सार में माल दौलत वाले और रियासत वाले थे। उनकी सरदारी को उनकी क़ौम तस्लीम करती थी।

(असदगुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 441 साद बिन उबअदा, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2003 ई)

हज़रत साद बिन उबादह रज़ि जाहिलीयत केज़माना में अरबी लिखना जानते थे हालाँकि उस वक़्त लिखने का कम लोग जानते थे। वह तैराकी और तीर-अंदाज़ी में भी महारत रखते थे और उन चीज़ों में जो शख़्स महारत रखता था इस को कामिल कहा जाता था। जाहिलीयत के ज़माना में हज़रत साद बिन उबादह रज़ि और उनसे पहले उनके पूर्वज अपने क़िला पर ऐलान करवाया करते थे कि जिसको गोश्त और चर्बी पसन्द हो तो वो दुलीम बिन हारिसा के क़िला में आ जाए। हिशाम बिन उर्वा ने अपने पिता से रिवायत की है कि मैंने साद बिन उबादह रज़ि को इस वक़्त पाया जब वह अपने क़िला पर आवाज़ दिया करते थे कि जो शख़्स चर्बी या गोश्त पसन्द करता है वह साद बिन उबअदा के पास आए अर्थात जानवरों का गोश्त ज़िब्ह करवा के बांटा करते थे। मैंने उनके बेटे को भी इसी अवस्था में पाया कि वह भी इसी तरह दावत देता था। कहते हैं कि मैं मदीना के रास्ते पर चल रहा था। उस वक़्त मैं जवान था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि मेरे साथ से गुज़र रहे थे, हशाम बिन उर्वा ने अपने पिता से रिवायत की है। कहते हैं उस वक़्त मैं जवान था और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि मेरे पास से गुज़रे जो आली नामक स्थान जो मदीना से नजद की तरफ़ चार से आठ मील के बीच स्थित एक वादी है, वहां अपनी ज़मीन की तरफ़ जा रहे थे। उन्होंने कहा कि हे जवान इधर आओ। अब्दुल्लाह बिन उम्र ने उन के पिता को बुलाया। उन्होंने कहा कि जवान !देखो !क्या तुम्हें साद बिन उबादा के क़िला पर कोई आवाज़ देता हुआ दिखाई दे रहा है। क़िला क़रीब था। मैंने देखा और कहा नहीं। उन्होंने कहा तुमने सच कहा।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न साद भाग 3 पृष्ठ 460-461 साद बिन उबादा , दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1990 ई)

(उम्दतुल कारी भाग 16पृष्ठ 279 किताब फ़ज़ाइलुल सहाबा दारे अहया अत्तुरास अलअरबी बेरूत 2003 ई)

लगता है कि जितना खुला हाथ हज़रत साद बिन उबादह रज़ि का था और जिस तरह वह बांटा करते थे उस के बाद वह काम जारी नहीं रहा। इसलिए हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि ने उनसे यह पूछा।

हज़रत नाफ़े रज़ि वर्णन करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि के क़िला के पास से गुज़रे तो उन्होंने मुझे कहा कि हे नाफ़े ये उनके पूर्वजों के घर हैं। साल में एक दिन मुनादी करने वाला यह आवाज़ देता कि जो चर्बी और गोश्त खाने का इच्छुक है वह दुलैम के घर आ जाए फिर दुलैम फ़ौत हो गया तो उबादा ऐसे ऐलान करने लगे। जब उबादा फ़ौत हो गए तो हज़रत साद रज़ि ऐसे ऐलान करने लगे। फिर मैंने क़ैस बिन साद को ऐसा करते देखा और क़ैस हद से ज़्यादा सख़ावत करने वाले लोगों में था।

(अलअसाबा फ़ी मअरफितल सहाबा भाग 2 पृष्ठ 595 साद बिन उबअदा, दारु जैल बेरूत 1992 ई)

अत: इस रिवायत से मज़ीद वज़ाहत हो गई कि उनकी औलाद तक यह सिलसिला जारी रहा। उस के बाद वह हालत नहीं रही। हज़रत साद बिन उबादह रज़ि ने बैअत उक़बा सानिया के अवसर पर इस्लाम क़बूल किया था।

(सैरुस्हाब भाग 3 पृष्ठ 375 दारुल इशाअत कराची 2004 ई)

सीरत ख़ात्मुल अंबयिा में इस के हालात इस तरह वर्णन हुए हैं कि

13 नबवी के महीना ज़विल हज्जा में हज के अवसर पर औस और ख़ज़रज के कई आदमी मक्का में आए। उनमें सत्तर शख़्स ऐसे शामिल थे जो या तो मुस्लमान हो चुके थे और या मुस्लमान होना चाहते थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिलने के लिए मक्का आए थे। मुसअब बिन उमैर रज़ि भी उनके साथ थे। मुसअब की माँ ज़िन्दा थी और यद्यपि शिर्क करने वाली थी मगर उनसे बहुत मुहब्बत करती थी। जब उसे उनके आने की ख़बर मिली तो उसने उनको कहला भेजा कि पहले मुझ से आकर मिल जाओ। फिर कहीं दूसरी जगह जाना। मुसअब ने जवाब दिया , अपनी माँ को कहा कि मैं अभी तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से नहीं मिला। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिलकर फिर आप के पास आऊँगा। अत: वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हाज़िर हुए। आप (स) से मिलकर और ज़रूरी हालात अर्ज़ कर के फिर अपनी माँ के पास गए। माँ उनकी यह बात कि पहले मुझे नहीं मिले सुन के बड़ी जली भुनी बैठी थी। उनको देखकर बहुत रोई और बड़ा शिकवा किया। मुसअब ने कहा कि माँ मैं तुम से एक बड़ी अच्छी बात कहता हूँ जो तुम्हारे लिए बहुत ही लाभदायक है और सारे झगड़ों का फ़ैसला हो जाता है। उसने कहा वह किया? मुसअब कहने लगे, बड़ी धीरे से जवाब दिया कि बस यही कि बुतपरस्ती छोड़ कर के मुस्लमान हो जाओ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान ले आओ। वह पक्की मुशरिका थी। सुनते ही शोर मचा दिया कि मुझे सितारों की क़सम है। मैं तुम्हारे धर्म में कभी दाख़िल ना होंगी और अपने रिश्तेदारों को इशारा किया कि मुसअब को पकड़ कर क़ैद कर लें मगर वो होशियार थे शीघ्रता से भाग कर गए।

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

बैअत उक़बा सानिया के सम्बन्ध में लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मुसअव से अन्सार के आने की सूचना मिल चुकी थी और उनमें से कुछ लोग आप (स) से अलग अलग मुलाक़ात भी कर चुके थे मगर चूँकि इस अवसर पर एक सामूहिक और अलग मुलाक़ात, एकान्त की मुलाक़ात की ज़रूरत थी इसलिए हज की रस्मों बाद ज़िल लहजा के महीना की मध्य तारीख़ निर्धारित की गई कि इस दिन आधी रात के क़रीब ये सब लोग पिछले साल वाली घाटी में आप (स) को आकर मिलें ताकि सन्तोष और एकान्त में बातचीत हो सके और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अन्सार को ताकीद फ़रमाई कि इकट्ठे ना आएं बल्कि एक एक कर के, दो दो कर के निर्धारित समय पर घाटी में पहुंच जाएं और सोते को ना जगाएँ और ना गैर हाज़िर का इंतिज़ार करें। जो मौजूद हैं वे आ जाएं। अत: जब निर्धारित तारीख़ आई तो रात के वक़्त जबकि एक तिहाई रात जा चुकी थी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अकेले घर से निकले और रास्ता में अपने चाचा अब्बास को साथ लिया जो अभी तक मुशरिक थे मगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत रखते थे और ख़ानदान हाशिम के रईस थे और फिर दोनों मिलकर इस घाटी में पहुंचे। अभी ज़्यादा देर नहीं हुई थी कि अन्सार भी एक एक दो दो कर के आ पहुंचे और ये सत्तर आदमी थे और औस और ख़ज़रज दोनों क़बीलों से सम्बन्ध रखने वाले थे। सबसे पहले अब्बास ने ,आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाचा ने , गुफ़्तगु शुरू की कि हे ख़ज़रज के गिरोह! मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने ख़ानदान में सम्मान्नीय तथा महबूब है और वह ख़ानदान आज तक उस की हिफ़ाज़त का ज़िम्मेदार रहा है और हर ख़तरा के वक़्त में इस के लिए सीना ताने खड़ा हुआ है मगर अब मुहम्मद का इरादा अपना वतन छोड़कर तुम्हारे पास चले जाने का है। अत: अगर तुम उसे अपने पास ले जाने की इच्छा रखते हो तो तुम्हें उस की हर तरह हिफ़ाज़त करनी होगी और हर दुश्मन के साथ सीना तानना पड़ेगा। अगर तुम उस के लिए तैयार हो तो बेहतर वर्ना अभी से साफ़ साफ़ जवाब दे दो क्योंकि साफ़ साफ़ बात अच्छी होती है। अलबरा बिन मअरूर जो अन्सार के क़बीला के एक बड़ी आयु वाले और असर वाले बुज़ुर्ग थे उन्होंने कहा कि अब्बास हम ने तुम्हारी बात सुन ली है मगर हम चाहते हैं कि रसूलुल्लाह ख़ुद भी अपनी मुबारक ज़बान से कुछ फ़रमाएं और जो ज़िम्मेदारी हम पर डालना चाहते हैं वह वर्णन फ़रमाएं। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरआन शरीफ़ की कुछ आयते ंतिलावत फ़रमाएं और फिर एक छोटी सी तक़रीर में इस्लाम की शिक्षा बयान फ़रमाई और अल्लाह के हुक़ूक़ और बन्दों के हुक़ूक़ की व्याख्या करते हुए फ़रमाया कि मैं अपने लिए सिर्फ इतना चाहता हूँ कि जिस तरह तुम अपने अज़ीज़ों और रिश्तेदारों की हिफ़ाज़त करते हो इसी तरह अगर ज़रूरत पेश आए तो मेरे साथ भी मामला करो। जब आप (स) तक़रीर ख़त्म कर चुके तो अलबरा बिन मअरूर ने अरब के नियम के अनुसार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा हे रसूलुल्लाह हमें इस ख़ुदा की क़सम है जिस ने आप (स) को हक़ तथा सच्चाई के साथ मबऊस फ़रमाया है। हम अपनी जानों की तरह आपकी हिफ़ाज़त करेंगे। हम लोग तलवारों के साया में पले हैं । मगर अभी वह बात ख़त्म नहीं कर पाए थे कि अबुल हैयम बिन तैयय्यहान ने उनकी बात काट कर कहा कि हे अल्लाह के रसूल! यसरब के यहूद के साथ हमारे पुराने सम्बन्ध हैं। आप (स) का साथ देने से वह विच्छेद हो जाऐंगे। ऐसा ना हो कि जब अल्लाह आप (स) को ग़लबा दे तो आप (स) हमें छोड़कर अपने वतन में वापस तशरीफ़ ले आएं और हम ना इधर के रहें ना इधर के। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हंस पड़े और आप (स) ने हंस के फ़रमाया नहीं नहीं ऐसा हरगिज़ नहीं होगा। तुम्हारा ख़ून मेरा ख़ून होगा। तुम्हारे दोस्त मेरे दोस्त होंगे। तुम्हारे दुश्मन मेरे दुश्मन होंगे। इस पर अब्बास बिन उबादा अन्सारी ने अपने साथियों पर नज़र डाल कर कहा। लोगो क्या तुम समझते हो कि इस वादा के क्या अर्थ हैं? इस का यह मतलब है कि अब तुम्हें हर एक के मुक़ाबला के लिए तैयार होना चाहिए अर्थात हर क़ौम के लोग जो हैं तुम्हारे ख़िलाफ़ हो जाऐंगे उनके मुक़ाबले के लिए तैयार होना चाहिए और हर क़ुर्बानी के लिए तय्यार रहना चाहिए। लोगों ने कहा कि हाँ हम जानते हैं मगर हे रसूलुल्लाह इस के बदला में हमें क्या मिलेगा? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हें ख़ुदा की जन्नत मिलेगी जो उस के सारे इनामों में से बड़ा इनाम है। सब ने कहा कि हमें यह सौदा मंज़ूर है। हे रसूलुल्लाह अपना हाथ आगे करें। आप (स) ने अपना मुबारक हाथ आगे बढ़ा दिया और ये सत्तर जां निसारों की जमाअत एक दिफ़ाई सन्धि में आप (स) के हाथ पर बिक गई। इस बैअत का नाम बैअत उक़बा सानिया है

जब यह बैअत हो चुकी तो आप (स) ने उनसे फ़रमाया कि मूसा ने अपनी क़ौम में से बारह नक़ीब चुने थे जो मूसा की तरफ़ से उनके निगरान और मुहाफ़िज़ थे। मैं भी तुम में से बारह नक़ीब निर्धारित करना चाहता हूँ जो तुम्हारे निगरान और मुहाफ़िज़ होंगे और वे मेरे लिए ईसा के हवारियों की तरह होंगे और मेरे सामने अपनी क़ौम के बारे में जवाब देने वाले होंगे। अत: तुम उचित लोगों के नाम चुन कर के मेरे सामने पेश करो। अत: बारह आदमी चुने गए जिन्हें आप (स) ने मन्ज़ूर फ़रमाया और उन्हें एक एक क़बीले का निगरान निर्धारित कर के उनके कर्तव्य समझा दिए और कुछ क़बीलों के लिए आप (स) ने दो दो नक़ीब निर्धारित फ़रमाए। जब नक़ीबों का निर्धारण हो चुका तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाचा अब्बास बिन अब्दुल मुतलिब ने अन्सार से ताकीद की कि उन्हें बड़ी होशियारी और सावधानी से काम लेना चाहिए क्योंकि क़ुरैश के जासूस सब तरफ़ नज़र लगाए बैठे हैं ऐसा ना हो कि इस वादा की ख़बर निकल जाए और मुश्किलें पैदा हो जाएं। अभी शायद वह यह ताकीद कर ही रहे थे कि घाटी के ऊपर से रात के अन्धेरे में किसी शैतान की आवाज़ आई एर्थात कोई शख़्स छुपा था, जासूसी कर रहा था कि क़ुरैश ! तुम्हें भी कुछ ख़बर है कि यहां (नऊज़ बिल्लाह) मुज़म्मम और इस के साथ के मुर्तद तुम्हारे ख़िलाफ़ किया वादे कर रहे हैं? इस आवाज़ ने सबको चौंका दिया मगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बिलकुल मुतमइन रहे और फ़रमाया कि अब आप लोग जिस तरह आए थे इसी तरह एक-एक दो-दो हो कर अपनी क़ियाम गाहों में वापस चले जाओ। अब्बास बिन नज़ला अन्सारी ने कहा। हे अल्लाह के रसूल! हमें किसी का डर नहीं है। अगर हुक्म हो तो हम आज सुबह ही इन क़ुरैश पर हमला कर के उन्हें उनके ज़ुल्मों का मज़ा चखा दें। आप (स) ने फ़रमाया नहीं नहीं मुझे अभी तक इस की इजाज़त नहीं है। बस तुम सिर्फ यह करो कि ख़ामोशी के साथ अपने अपने ख़ेमों में वापस चले जाओ। जिस पर सारे लोग एक एक दो दो कर के दबे-पाँव घाटी से निकल गए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी अपने चाचा अब्बास के साथ मक्का वापस तशरीफ़ ले आए। क़ुरैश के कानों में चूँकि भनक पड़ चुकी थी कि इस तरह कोई ख़ुफ़ीया इज्तिमा हुआ है। वे सुबह होते ही यसरब के डेरा में गए और उनसे कहा कि आपके साथ हमारे पुराने सम्बन्ध हैं और हम हरगिज़ नहीं चाहते कि इन सम्बन्धों को ख़राब करें मगर हमने सुना है कि पिछली रात मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)के साथ आपका कोई ख़ुफ़ीया मुआहिदा या समझौता हुआ है। यह क्या मामला है? औस और ख़ज़रज में से जो लोग बुतपरस्त थे उनको चूँकि इस घटना की कोई सूचना नहीं थी वे सख़्त हैरान हुए और साफ़ इनकार किया कि हरगिज़ कोई ऐसा घटना नहीं हुई। अब्दुल्लाह बिन उबय्य बन सलूल भी जो बाद में मुनाफ़क़ीन मदीना का सरदार बना वह भी इस गिरोह में था। उसने कहा कि ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता। भला यह मुम्किन है कि यसरब वाले कोई अहम मामला तय करें और मुझे उस की सूचना ना हो? उद्देश्य इस तरह क़ुरैश का शक दूर हुआ और वे वापस चले आए और इस के थोड़ी देर बाद ही अन्सार भी वापस यसरब की तरफ़ कूच कर गए लेकिन उनके कूच कर जाने के बाद क़ुरैश को किसी तरह इस ख़बर की तसदीक़ हो गई कि वास्तव में यसरब वालों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ कोई वादा किया है जिस पर उनमें से कुछ आदमियों ने यसरब वालों का पीछा किया। क़ाफ़िला तो निकल गया था मगर सइद बिन उबादह रज़ि किसी वजह से पीछे रह गए थे उनको ये लोग पकड़ लाए और मक्का के पथरीले मैदान में ला कर ख़ूब मारा पीटा और सिर के बालों से पकड़ कर इधर उधर घसीटा। आख़िर जुबेर बिन मुतइम और हारिस बिन हरब को जो सअद के परिचित थे उन्हें सूचना हुई तो उन्होंने उनको ज़ालिम क़ुरैश के हाथ छुड़ाया।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुल अंबिया पृष्ठ 227 से 229 तथा 232-233)

हज़रत साद बिन उबादह रज़ि के सम्बन्ध से अभी कुछ और वर्णन भी है इंशा अल्लाह अगले ख़ुतबा में वर्णन होगा।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 10 जनवरी 2020 ई पृष्ठ 05 से 08)

☆ ☆

☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 23-30 January 2020 Issue No. 4-5

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

हिकायते सअदी

सदियों से आचरण की शिक्षा देती रोशन हिकायते सअदी रहमतुल्लाह

बेफकूफी का अंजाम

एक बेवा अमीर औरत की दो नौकरानियां थीं जिनसे वह घर का काम लेती थी। ये दोनों नौकरानियां सुस्त, काहिल और कामचोर थीं। उन्हें काम करने से सख़्त नफ़रत थी। खासतौर पर सुब्ह-सवेरे उठना तो एक आँख ना भाता था

उनकी मालिका उन्हें मुर्ग़ की अज़ान पर जगा देती कि उठो, सुबह हो गई है। घर का काम करो। उधर मुर्ग़ की अज़ान का क्या वह तो आधी रात गए ही अज़ान देने लगता।

दोनों नौकरानियों ने तंग आकर मुर्ग़े को जान से मार देने का फ़ैसला किया। कि ना यह होगा ना अज़ान देगा और वह दिन चढ़े तक मज़े की नींद सोएँगी। एक दिन दोनों नौकरानियों ने मालिका की ग़ैरमौजूदगी का फ़ायदा उठाते हुए मुर्ग़ को पकड़ कर मार डाला और एक जगह दबा दिया। अब हुआ यह कि मुर्ग़े के ना होने से बेवा को वक़्त का अंदाज़ा ही ना रहा। वह नोकरानियों की जान खाने लगी और उन्हें आधी रात को जगाने लगी।

शिक्षा: ग़ैर ज़रूरी चालाकी और होशयारी का नतीजा हमेशा तकलीफ़ देने वाला साबित होता है।

अदले का बदला

एक लोमड़ी एक चील की सहेली बन गई। दोनों में इतना प्यार हुआ कि एक दूसरे के बग़ैर रहना मुश्किल हो गया। एक दिन लोमड़ी ने चील से कहा

"क्यों ना हम पास रहें। पेट की फ़िक्र में अक्सर मुझे घर से ग़ायब रहना पड़ता है। मेरे बच्चे घर में अकेले रह जाते हैं और मेरा ध्यान बच्चों की फ़िक्र में लगा रहता है। क्यों ना तुम यहीं कहीं पास ही रहो। कम से कम मेरे बच्चों का तो ख़्याल रखूगी

चील ने लोमड़ी की बात से सहमति की और अन्त में कोशिश करके रिहायश के लिए एक पुराना पेड़ तलाश किया जिसका तना अंदर से खोखला था। इस में सुराख़ था। दोनों को यह जगह पसंद आई। लोमड़ी अपने बच्चों के साथ सुराख़ में और चील ने पेड़ पर बसेरा कर लिया।

कुछ समय बाद लोमड़ी की ग़ैरमौजूदगी में चील जब अपने घोंसले में बच्चों के साथ भूखी बैठी थी, उसने अपना और अपने बच्चों का पेट भरने के लिए लोमड़ी का एक बच्चा उठाया और घोंसले में जा कर ख़ुद भी खाया और बच्चों को भी खिलाया। जब लोमड़ी वापस आई तो एक बच्चा ग़ायब पाया। उसने बच्चे को इधर उधर बहुत तलाश किया मगर वह ना मिला। आँखों से आँसू बहाने लगी। चील भी दिखावे का अफ़सोस करती रही।

दूसरे दिन लोमड़ी जब जंगल में फिर शिकार करने चली गई और वापस आई तो एक और बच्चा ग़ायब पाया। तीसरे दिन भी ऐसा ही हुआ। इस का एक और बच्चा ग़ायब हो गया। चील लोमड़ी के सारे बच्चे खा गई। लोमड़ी को चील पर शक जो हुआ था, वह मज़बूत यक़ीन में बदल गया कि इस के सारे बच्चे चील ही ने खाए हैं मगर वह चुप रही। कोई शिकायत ना किया। हर वक़त रोती रहती और ख़ुदा से फ़र्याद करती रहती कि

"हे ख़ुदा मुझे उड़ने की ताक़त प्रदान फ़र्मा ताकि में अपनी दोस्त नुमा दुश्मन चील से अपना बदला ले सकूं।

ख़ुदा ने लोमड़ी की दुआ सन ली और चील पर अपना क़हर नाज़िल किया। एक रोज़ भूख के हाथों तंग आकर चील खाने की तलाश में जंगल में उड़ी चली जा रही थी कि एक जगह धुआँ उठता देखकर जल्दी से इस की तरफ़ लपकी। देखा कुछ शिकारी आग जला कर अपना शिकार भूनने में व्यस्त हैं

चील का भूख से बुरा हाल था। बच्चे भी बहुत भूखे थे। सब्र ना कर सकी। झपटा मारा और कुछ गोश्त अपने पंजों में उचक कर घोंसले में ले गई। उधर भुने हुए गोश्त के साथ कुछ चिनगारियां भी चिपकी हुई थीं। घोंसले में बिछे हुए घास फूस के तिनकों को आग लग गई। घोंसला भी जलने लगा। उधर तेज़ तेज़ हवा चलने लगी। घोंसले की आग ने इतनी फ़ुर्सत ही ना दी कि चील अपना और अपने बच्चों का बचाओ कर सके। वहीं तड़प-तड़प कर नीचे गिरने लगे। लोमड़ी ने झट अपना बदला ले लिया और उन्हें चबा-चबा कर खा गई।

शिक्षा: जो किसी के लिए कुँआं खोदता है, ख़ुद भी इसी में जा गिरता है। इसलिए अक्लमन्दों ने कहा है कि बुराई करने से पहले सोच ले कहीं बाद में पछताना ना पड़े

मौत के बाद विलाप

रीछ ने एक बकरा शिकार किया और खाने के लिए बैठा। अचानक इधर से एक भूखा शेर भी आ निकला और आते ही रीछ पर हमला कर दिया। रीछ ने अपने हाथ से शिकार निकलते देखा तो वह आपे से बाहर हो गया। उसने दिल में कहा कि ऐसे मुफ़्त ख़ोरे शेर से क्या डरना, उस का डट कर मुक़ाबला करो। यह सोच कर इंतिहाई ग़ुस्से से दाँत किटकिटाता हुआ शेर से उलझ गया। काफ़ी देर तक दोनों में लड़ाई होती रही। यहां तक कि लड़ते लड़ते लहूलुहान हो गए। न रीछ हार मानता था न शेर। ख़ौफ़नाक लड़ाई जारी रही। दोनों ज़ख़्मों से चूर चूर बे-दम हो कर ज़मीन पर बेसुध गिर गए

एक चालाक लोमड़ी काफ़ी देर से दूर खड़ी यह तमाशा देख रही थी। बड़ी मौक़ा संभालने वाली थी। मौक़ा से फ़ायदा उठाया और बकरे को उठा कर ले गई। शेर और रीछ बेबसी से यह मन्ज़र देखते रह गए

शिक्षा:आए मौक़ा को हाथ से गँवाना बेफकूफी है। बार-बार अवसर नहीं मिलते। एक-बार मौक़ा खो कर बाद में अफ़्सोस करने से क्या हासिल होगा

अपना काम ख़ुद करना चाहिए

किसी बाग़ में एक कबूतर ने अपना घर बनाया हुआ था। जिसमें वह दिन-भर अपने बच्चों को दाना चुगाता। बच्चों के पर निकल रहे थे। एक दिन कबूतर दाना चोंच में दबाए बाहर से आया तो सारे बच्चों ने उन्हें चिन्ता से बताया कि अब हमारे आशियाने की बर्बादी का वक़्त आ गया है। आज बाग़ का मालिक अपने बेटे से कह रहा था

"फल तोड़ने का ज़माना आ गया है। कल में अपने दोस्तों को साथ लाऊँगा और उनसे फल तोड़ने का काम लूँगा। ख़ुद मैं अपने बाज़ू की ख़राबी की वजह से यह काम ना कर सकूँगा

कबूतर ने अपने बच्चों को तसल्ली देते हुए कहा। बाग़ का मालिक कल अपने दोस्तों के साथ नहीं आएगा। फ़िक्र करने की कोई बात नहीं।

और वास्तव ऐसा ही हुआ। बाग़ का मालिक दूसरे रोज़ अपने दोस्तों के साथ फल तोड़ने ना आया। कई रोज़ बाद बाग़ का मालिक अपने बेटे के साथ बाग़ में आया और कहने लगा

"मैं इस दिन फल तोड़ने ना आ सका क्योंकि मेरे दोस्त वादा के बावजूद ना आए लेकिन मेरे दोबारा कहने पर उन्होंने पक्का वादा किया है कि कल वे ज़रूर आएँगे और फल तोड़ने बाग़ में जाऐंगे

कबूतर ने यह बात बच्चों की ज़बानी सुनकर कहा। "घबराओ नहीं, बाग़ का मालिक अब भी फल तोड़ने नहीं आएगा। यह कल भी गुज़र जाएगी

इसी तरह दूसरा रोज़ भी गुज़र गया और बाग़ का मालिक और इस के दोस्त बाग़ ना आए। आख़िर एक रोज़ बाग़ का मालिक अपने बेटे के साथ फिर बाग़ में आया और बोला

" मेरे दोस्त तो बस नाम के हमदर्द हैं। हर बार वादा करके भी टाल मटोल करते हैं और नहीं आते। अब मैंने फ़ैसला किया है कि उन पर भरोसा करने की बजाय अपना काम मैं ख़ुद करूँगा और कल बाग़ से फल तोडूँगा।"

कबूतर ने यह बात सुनकर परेशानी से कहा। बच्चो अब हमें अपना ठिकाना कहीं और तलाश करना चाहिए। बाग़ का मालिक कल यहां ज़रूर आएगा क्योंकि उसने दूसरों पर भरोसा करना छोड़ दिया है।

शिक्षा :दूसरों पर भरोसा हमेशा नुक़्सान का बाइस बनता है। अपना काम ख़ुद करना चाहिए।

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad